सुनो! नदी क्या कहती है.....

"संवेदन सांस्कृतिक कार्यक्रम"

(सोलह दृष्यों में संपन्न)

लेखक : डॉ. सरूप ध्रुव

–:पात्र:–

1.	गुदडी बाबा	–अलगारी, अकेला, फिलसूफ
2.	सलीम	–बस्तीका जवान, वामपंथी कार्यकर
3.	नूरभाई	–सलीम के पिता, बेकार मिल मजदूर
4.	शरीफन बी	–सलीम की अम्मी, चींदी में से खोलां बनाती है।
5.	कालीबाई	–पुराने कपडे–नये बरतन का काम करनेवाली
6.	भीखू	–कालीबाई का पति, छूटक मजदूरी करता है।
7.	तितलीबाई	–सेक्स वर्कर, सलीम को प्यार करती है।
8.	मोहन	–मोहल्ले का लीडर, तकसाधु
9.	फूलीबाई	–नर्मदा डेम की विस्थापित आदिवासी मजदूर
10.	बिजयाभाई	–फूलीबाई का पति, वह भी छूटक मजदूरी करता है।
11.	नीमा बहेन	–स्वैच्छिक संस्था की कार्यकर्ता
12.	गेणुदादा	–हिंदुत्ववादी गुंडा
13.	आचार्यजी	–हिंदुत्ववादी नेता / प्रचारक
14.	मि. जे.जे.	–सूत्रधार – NRI युवक(जयंती जमीनदार)
15.	सुंदरी	–नटी – NRI युवति

(इसके अलावा बस्ती के लोग, कुछ गुंडे, कुछ पुलिस–जवान)

सुनो नदी क्या कहती है.....

दृश्य –1

- यह दृश्य के पात्रः
  (1) गुदडी (2) नूरभाई (3) शरीफा (4) काली (5) भीखु (6) मोहन (7)तितली (8) घराक और लोफर युवाने, बस्ती के ज्यादे से ज्यादा लोग
- स्थळः कोट की रांग, बस्ती
- समयः मधरात

मध्यरात्रि, नदी के किनारे की सोयी पडी बस्ती, एक ओर पुराने किल्ले की टूटी हुई दिवार का हिस्सा दिख रहा है, दिवार के सायें में कुछ लोग खटिया में सोये पडे हैं। दूसरी ओर झुग्गी–झोपड़ियां के बाहरी हिस्से नजर आते हैं। एक दरवाजे के भीतर लाल बल्ब जल रहा है। मंच के बीच में ओटा है, जिस पर बैठ के गुदडीबाबा गा रहा है।

गीत –1

गुदडीः शहर को हमने सिकुडते देखा
कभी टुकडों में बिखरते देखा –शहर को....

लोग कंकर और पत्तियों की तरह
उड रहे हैं वो धज्जियों की तरह
दर–ब–दर उनको भटकते देखा –शहर को...

यह नदी दर्द बन के बहती है
हर लहर चीख बन के रहती है
हमने मौजों को चटखते देखा –शहर को....

इसकी दर्दभरी गूंज को चिरती हुई दमकल की आवाज आती है. दनदनाता हुआ दमकल नदी के पुल के उपर से जा रहा है. उसकी लाल लाईट, घंट की आवाज वातावरण को चिर के रख देती है। लोग बौखला के जाग रहे हैं, इकट्ठा होने लगते हैं, गुदडी चौंक कर अपनी जगह पर खडा हो जाता है, चिंता से हाथ उठ जाते हैं। लोगों में हो–हल्ला मच जाता है।

तरह तरह की बाते सुनाई देती हैं।

क्या हुआ?.... लगता है, आग लग गई.... हाय हाय, धमाल फिर से चालु हो गई?... अरे, पर इस बार तो नदी की उस साईड़ में कुछ हुआ लगता है.... तो होने दो.... हर बार हमीं पर क्यों आफत आयें?.... इन्हें भी तो पता चलें, घर का जलना किस को कहते हैं?.... अरे, वो बडेवाले थियेटर में आग लगी है क्या?..... नहीं नहीं वो दमकल तो बहुत आगे निकल गया लगता है.... अल्या, आग ही लगी है के कुछ नवा जूनी हुई है? कहीं बमवम तो नहीं फटा होगा?..... हो सकता है..... मुवे आतंकवादी होंगें..... चल हट् डरपोक..... नहीं नहीं, सच्ची– वो बोर्डरवाला इलाका तो उधर ही है ना? किया होगा किसी ने धमाका.... चूप..... ये तो कुछ ज्यादा

ही हो गया है..... देखो, देखो ये दूसरा लाय बंबा..... अरे, तीसरा..... और चौथा भी.... ओहोहोहो ये तो गजब हो गया लगता है.... लाहौल विला कुव्वत..... वगेरे संवादो।

तभी धडाक् से वह लाल बत्तीवाला दरवाज़ा खुल जाता है, एक आदमी कंधे पर कमीज डाल के, लूंगी बांधता हुआ, हडबडाता हुआ, मूँह छूपा के दौड जाता है। पीछे घर के दरवाजे पर जुडा बांधती हुई, साडी लपेटती हुई तितली आ के खडी रहेती है। मुंह बिगाड के उस आदमी के पिछे बडबडाती है।

तितलीः– साला, चूहा कहीं का.... (पुल की ओर मुंह बिचका कर) ये भी मूई सायरन, धंधे का टेम खराब किया..... मां का.... (थूंक देती है)

तितली को देखकर कुछ जवान टोले में से, सीटी बजाते हैं, कुछ मजाक भी करते हैं।

1. अरे तितलीबाई, तू घराक की फिकर कायकू करती है? दूसरा आ जायेगा।
2. बोल, मैं आ जाऊ? (ठहका लगाता है, तितली उसकी पिछाडी पर चपत लगाती है और टोले में शामिल होती है)

तितलीः हां, हां, तू तो ऐसे वख्त में घाघरे में ही घूस जायेगा, अरे बहुत जोर उछलता है तो जा ना, उस मोहल्ले में जाकर खडा रह जा, सरकारी गोलियों के सामने..... जो खालीपीली भूखें लोगों को खा जाती है!

भीखूः अबे ओ झांसी की रानी! गोलिया खाली सरकारी ही नहीं होती है उधर तो खानगी गोलीबार भी चलते हैं। और वह भी वो फोरेन की बंदूक में से.... क्या कहते है..... रांडनी.... चाश्नीकोव.... काश्नीकोव.....?

मोहनः (लीडरी झाडता हुआ) श्.... तितलीबाई, भीखुभाई, छोड दो.... भूल जाओ ये बातें, पुरानी हो गई, गई–गुजरी हो गई. अब तो हम नये विकास की बातें करेंगेः (ललकार के) "छोडों कल की बातें, कल की बात पुरानी, नये दौर में लिख्खेंगें हम मिलकर नई कहानी"....

गुदडीः (धीरे से, उसके कंधेपे हाथ रखके) लिखेंगें, जरूर लिखेंगें मोहन, पर इस गीत की जो आखरी, मेन लाईन है उसका क्या?

मोहनः "हम हिन्दुस्तानी.... हम हिन्दुस्तानी"! गुदडीबाबा, इतना भी भूल गये?

गुदडीः कुछ नहीं भूला रे, मोहन! मैं, कुछ नहीं भूला..... पर तू तो बोल कि कौन कहलाएगा "हिन्दुस्तानी"? फक्त 'हिन्दु' या हिन्दु के सिवा और भी?.... इस देश के बसनेवाले सारे लोगाँ?

(मोहन कुछ समज़ता है, तभी शरीफन बोल पडती हैः)

शरीफनः और मोहनभाई, जो कुछ हुआ है उसे "गई–गुजरी" कर के टाल क्यों रहे हो? कैसे छोड देंगें? हम पे जो बीती है उसे कैसे भूला पायेंगें? ऐसी मारकाट, ऐसी लूट खसोट, ऐसी आगजनी, बच्चों–औरतों पे इस तरह के हमले पहले ते हमने कब्बी नहीं देखें थे।

नूरभाईः (उस को शांत करते हुए) शरीफन बी, जीना है तो ये सब भुलाने की आदत डालनी होगी।

शरीफनः अरे मियां, हम उनहत्तर ('69) को भूले, पचासी–छयासी को('85–'86)भी भूलने की कोशीश करेली, फिर भी बानवे('92) में जो होना था वही हुआ ना?! कहां हम, कहा बाबर और कहां हम? हम गरीबों को भला कायकी खटपट? फिर भी सहते आयें.... तो उस बार में बचे थे वो दो हज़ार दो में खत्म हुए(2002) अब क्या बचा है अपने पास जो कहानिया लिख्खें?!

नूरभाईः चूप हो जा बी, वरना तेरी ये कहानी खत्म हो जायेगी!

शरीफनः (बौखलाकर) मैं नहीं चुप रैनेवाली। कब से चूप ही तो हूं। याद है, मिल की चाली में रहते थे, तब मेरा सलीम मेरे पेट में था। एकदम मिलें बंद हो गई, और रेल्वेप्लेटफार्म पे भाग निकले.... सलीम को वहीं पे जना.... तब भी चूप रही थी! वहां से भटकते हुए उधरवाले मोहल्ले में जा बसे तब मस्जिदवाले दंगें हुए..... मेरी मुन्नी तब मेरे पेट में थी.... ठीक दंगों के बीच, इस कालीबेनने मदद की थी जच्चा बच्चा दोनों की....(काली नजदीक आकर उसे पुचकारती है) (सब शरम–गुस्से के मारे यह सब सुन रहे हैं)

तितलीः (चिहूक कर) खाला, शुकर करो कि, वह उस वख्त तेरे पेट में थी, वरना गई साल होती तो ना मुन्नी बचती, ना तेरा पेट!

गुदडीः (बोझील सन्नाटे को चिरकर, नूरभाई और शरीफा को एक एक हाथ से नजदीक खींचकर, मोहन के सामने देखकर) सुन रहे हो, मोहन! यह हाल हुए हैं इन्सानों के.... इन्सानियत के! गनीमत है कि हमारी बस्ती को उस जहरीली हवा ने नहीं निगला है।

मोहनः (खिसियाना) अरे नहीं, गुदडीभई! अब ऐसा कुछ नहीं होनेवाला। अब तो मैं हूं ना, आप के बीच?! आप से आराम से सो जाओ! आप के लिए जागनेवाला मैं हूं ना?!

कालीः ऐ, मोहनिया, तू भी अपने मंत्रीजी की भासा बोलने लगा? मैं सब जानती हूँ –तेरा मतलब तो हमारे वोटों से हैं!.... इलेक्शन तक तू जागेगा पर तब तक तो हमारी नींद हराम हो गई होगी!

(तभी उपर से जैसे हेलीकोप्टर जा रहा है, जिस की आवाज़ से सबका ध्यान जाता है)

कालीः लो, याद किया, कि सैतान दिखाई दिया!

तितलीः चले होगें किसी देसबिदेस घूमने!

भीखूः अरी मूरख, ये तो उस ऐरिया के लोगों का हाल–चाल पूछने जा रहे होंगें.... जहां अभी आतंकवादियों ने बम फोडे थे!

तितलीः आय हाय हाय, इतनी जल्दी? इतनी रात में?

नूरभाईः हां.... इस बार वाली आग तो उस पार लगी है ना.... बडे लोगों के मोहल्ले में? फिर तो झटफट जनाच पडेगा ना?

गुदडीः अरे नहीं.... लगता है इनको दिल्ली जाना पड रहा है, सुपरफोस्ट में! तभी तो जनाब रात का नकाब ओढ कर गुपचुप गुम हो रहे हैं।!

(हेलीकोप्टर की घरघराहट एकदम इन के उपर से, उसकी अंधकारमय छाया बस्ती को निगल जाती है।)

फेड आउट

दृश्य –2

- पात्रः सुंदरी(नटी)
- स्थळः एप्रन के दोनों छोर, मध्यभाग

- ऐप्रन के दोनों छोर पर अभिनय होगा, जिस पर दो स्पोट मात्र।
- पहेला स्पोट ऐप्रन की बाँयी और गिरता है।

सुंदरी अखबार बिछाकर बैठी है। उसे जोर से पढने की आदते है।

सुंदरीः चलो गुजरात..... चलो गुजरात..... चलो गुजरात। वायब्रन्ट गुजरात..... जुबिलियन्ट गुजरात... . ब्रिलियन्ट गुजरात। गुजरात की जग विख्यात महाजन परंपरा का पुनरूत्थान। विश्वभर के अतिथियों को आग्रहभरा आव्हान। आईए, गुजरात में, पूंजी निवेश कीजिये, गुजरात में। हम आप की.... और गुजरात की समृद्धि को कई गुना.... कई कई गुना गुना.... कई कई कई गुना गुना गुना बढायेंगें.... स्वागत है.... स्वागत है.... स्वागत है! सुना तुमने जे.जे.? अखबारों की गर्जना को सुना? साक्षात मंत्रीजी की ही जैसे दहाड है.... हिल उट्ठे पहाड हैं.... खोई हुई अस्मिता को लौटाने की जुगाड़ है.... सुनते हो, जे.जे..... उर्फे जयंति जमिंदार?

- तभी दूसरी और स्पोट लाईट। जे.जे. घूमनेवाली कुरसी पर पिछे मुंह कर के बैठा है, सामने कम्प्युटर पर इन्टरनेट चालू है। हाथ में लेटेस्ट मोबाईल है। सुंदरी की पुकार सुनकर कुर्सी घुमाता है।

जे.जे.: ओ.... यू.... सुंदरी! स्टोप योर नोनसेन्स! बकवास बंद! तुम जानती हो, तुम्हारा ये अखबार और अखबार पढना कितना आउट ओफ डेट हो गया है? यू नो, वी आर लिवींग इन ट्वन्टी फर्स्ट सेन्चुरी! वॉट एवर! तुमने जो खबर अभी अभी सुनाई वह तो कबकी बासी हो चुकी है। येस, ये इन्टरनेट पर तो बुकिंग भी शुरू हो गई है। –ऐर बुकिंग, होटल बुकिंग, पार्टी प्लोट बुकिंग, एटसेट्रा–एटसेट्रा–एटसेट्रा..! धीस वील बी ए बिगेस्ट, बीग–बिगर–बिगेस्ट ईवेन्ट इन ध हिस्ट्री ओफ धी बिजनेस वर्ल्ड.... यू सी!

सुंदरी: ओ नो.... ओन्ली इन बिजनेस वर्ल्ड, यह तो पूरे मानवसमाज, मानव संस्कृति के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ –सब से सुंदर –सब से महान नृत्य महोत्सव होगा। अने हां, सब से लंबा..... कहना तो में भूल ही गई! नवरात्रि! आहा.... जे.जे. मैं तो बहुत ही उत्सुक हूँ, उत्तेजित हूँ.... मेरे अपने शहर में जाने के लिए.... अमदावाद.... अहमद–आबाद! मेरा प्यारा सा घर, मेरा प्यारा शहर....

जे.जे.: शट्प! इसका नाम कर्णावती है, वायब्रन्ट गुजरात के साथ ये ही प्राचीन नाम अच्छा लगता है और सच्चा भी।

सुंदरी: जो भी हो.... वॉट ईज धेर इन नेम?! असली मजा तो उन छोटीछोटी–संकरी संकरी पोळो में गरबा घूमने की है.... आहा वो पोळें। खिशकोलानी पोळ.... देडकानी पोळ.... लीमडानी पोळ..... आमली नी पोळ.... ओ जे.जे. अयाम सो इगर टु गो बेक टु माय ओन रूट्स.... वापस विरासत की गोद में.... (वह गरबा नाचना शुरू कर देती है)

जे.जे.: ओ..... नो! अभी से?....

सुंदरी: हां, अभी से.... लगता है मैं सच्चीमुच्ची गुज्जु हुँ.... गुर्जर बिननिवासी, मैं बनूंगी भारतवासी... .. ए. .. मुजे बहुत पुराना दांडिया रास याद आ रहा है.... कहो कि मेरे रोम–रोम से फूट पडा है.... "आशाभर्या ते अमे आवियां ने मारे व्हाले रमाडया रास रे.... आवेल आशाभर्या!"

(घूमती रहती है –जे.जे. खडा हो के जुड जाता है –कुछ पल के लिये पाश्चत्य पोषाक पहनें ही दांडिया नाचेंगें)

फेड आउट

दृश्य –3

दोपहर का वक्त है। हमारे लोग मोहल्ले के चौक में, अपने छोटेमोटे घरेलू कमाई के काम कर रहे हैं। काली पुराने कपडे छांट रही है, शरीफा गुदडी बना रही है, नूरभाई पुरानें अखबार/ब्राउन पेपर मे से थैलिया बना रहा है। और गुदडीबाबा सबको हाथ बंटाते हुए गा रहा है। तितली कपडे सूखा रही है, भीखू खटियां में पीकर लेटा है। गुदडी के साथ बाकी लोग भी गायेंगें।

संघगान(2)

गुदडीः हमारे हाथ.... हमारी हिंमत (2)
और सबः हमारे हाथ.... हमारी ताकत (2)
बंट जायें हाथ.... तो कुछ भी नहीं
मिल जायें हाथ.... तो वाह वाह भई!....

हाथों से हम जीनेवाले
दिल की धडकन देती ताल,
हाथ देखते सपने कलके
आंखे उससे होवे निहाल.... बंट जायें हाथ....

यह दृश्य चल रहा है, तभी हाथ में शाम का अखबार लेकर सलीम दौडा हुआ आता है। गाना रूक जाता है। सारे लोग चिंतातुर।

शरीफाः अरे, सलीम, क्या हुआ बेटे?

सलीमः इस.... इस अखबार में क्या आया, पता है?

सारेः क्या? कुछ हुआ क्या? फिर से धमाल?....

सलीमः अरे नहीं.... उससे भी कुछ ज्यादा ही खतरनाक शायद...

गुदडीः बोल भी दे बेटे.... ऐसी कौन सी आफत आनेवाली है?

सलीमः शहर के मेयर ने ऐलान किया है। हजार दिन में इस शहर को, इस जगह को खूबसूरत बना देंगें।(गुदडी अखबार लेकर पढ रहा है, चिंतित है)

नूरभाईः अरे वाह, क्या कोई जादू की छडी घूमानेवाले हैं?

सलीमः नहीं अब्बा, हमारी बरबादी की बिजली गिरनेवाली है!

तितलीः पहेलियां क्यों बुझाता है रे? सीधी सीधी बात फूट ना?

गुदडीः सीधी बात ये कि म्युनिसिपालिटी और सरकार मिलके अख्खे नदी किनारे पर बाग–बगीचे, सिनेमा थियेटर, बाजार, वोटर पार्क.... सब खडा कर देंगें और.... हम लोगों को बेसहारा.... बेघर!

सारेः मतलब? बेघर? क्या बकते हो?

सलीमः (बीच में, झल्लाकार) बाबा बक नहीं रहा है – जो होनेवाला है, वही कह रहा है.... हमें इस जगह से उठायेंगें तभी उनकी नयी दुनिया बसेंगी ना? (लोग बौखलाने लगते है,
भीखु भी उठ कर आ गया है)

तितलीः (कुछ समझ कर) हां.... हम गरीबों का तो उनकी दुनिया में क्या काम? हमारे बिकने पर
ही तो इन की बाज़ारें धमधमाती हैं!

कालीः (झल्लाकर) अरे, बिकेंगी मेरी बला रात! हम यहां से कहीं नहीं जानेवाले!

गुदडीः कालीबेन, बोलना आसान है पर करने की बारी आयेंगी तब पता भी नही चलेगा कि, कब
पैरों तले से ज़मीन खिसक गई!

सलीमः काली मौसी, वो वाला खेल भी तुम्हारे जूने–पुराने कपडों के सामने नये बर्तन जैसा ही
कुछ होगा। जैसे तुम पुराने कपडे लेकर नये बरतन देती हो वैसा ही करेंगें वे लोग!

नूरभाईः और क्या?.... कुछ फायदा तो होगा ही होगा इन लोगोंका!

शरीफाः (समझ गई है, बौखलाकर) हां.... फायदा ही उठायेंगें वे लोग! मुझे सब पता है, ये ही लोग
हैं। जिन्होंने इस शहर को सुलगाया था। जिन्होंने हमे मरवाया–कटवाया था! अब चले हैं हमें खरीदनें! मैं सब जानती हूँ। ऐसे लोगों के लिये हम लोग इन्सान नहीं है.... चीज़ें
हैं चीज़ें.... बस, खरीदने–बिकनेवाली चीज़ें!

कालीः चूप मर! हम क्यों चीज़ें बन जायें? खबर है, कितनी मेहनत से ये घर बनाये हैं, बसाये हैं?
नूरभाईः और टिकाये भी हैं। बाहर कितने आंधी–तूफान आये, जलजले आयें.... पर हमने अपने
आपको बचाके रख्खा था.... तो अब क्या सब बिक जायेगा? बिखर जायेगा?

गुदडीः शायद हमारा साथ साथ रहेना इन्हें परवडता नहीं है, इसी लिए हमें तोडने आये हैं, इसी
लिए हमें अब ज्यादा तकलीफ झेलनी पडेगी।
(तभी ऐरिया लीडर मोहन आ टपकता है)

मोहनः अरे, मेरे होते हुए तुम सबको तकलीफ काय की? (कुछ हंस देते हैं, कुछ गुस्से से – डर
से चूप हो जाते हैं)

मोहनः (नफ्फट की तरह) कालीबेन, गरम क्यों होती हो? चूहा हूँ तभी तो हर जगह घूस जाता
हूँ। कहो, काहे की फिकर लेकर बैठे हो सब?

कालीबेनः सलीम, ये मोहनिया तो पूरा सरकारी चूहा है, अखबारवालों से पहेले ही सारी खबरें
चाटकर आया होगा!

नूरभाईः अरे वोहीच तो.... इस नदी किनारे पर जो बाग–बगीचे–बाज़ार–टोकीज होनेवाले हैं, उसी
की फिकर है सबको।

मोहनः ओ..... ये बात है? अरे भई, इस में गभराने की क्या ज़रूरत? मैं हूँ ना?!

शरीफाः तुम क्या कर लोगे? वो सारा सरकस रोक सकोंगें क्या?

तितलीः लो, कल्लो बात! बुआ.... इस चूहे का तो उस में भी कोई कमीसन होगा!

मोहनः ऐ बाई, मुंह संभाल के बात कर.... वरना....
(तितली जवाब नहीं देती है, जीभ निकाल के चिढाती है)

सलीमः खाके (तेवर बदलकर) तो उसने गलत क्या कहा? तुम्हारे जैसे लोग ऐसे ही सरकारी खुरचन तो जीते हैं।
(मोहन घंस जाता है, गुदडी दोनों के बीच में आ कर)

गुदडीः . होगी.... नये देखो सलीम, आज यूं तेवर दिखाने का वक्त नहीं है। मोहन को यहां कौन नहीं जानता?... पर अपनी लडाई उस जैसे लोगों के साथ नहीं है। हमारी लढ़ाइ बडी होगी, लंबी सिरे से हमें बाहर की ताकतों के सामने भिडना पडेगा....

भीखुः (अपनी समझ से) हां, और सारी बातों को ठीक से समझना पडेगा। दोनों तरफ की बात सुननी पडेगी। हमारा फायदा–नुक्सान भी देखना पडेगा।

कालीः है (कमर पे हाथ रख के, धमकाती हुई) देख भीखले.... तू फायदे.... नुकसान की बात करता तब तेरे मन में कुछ खोट लगती है। पहले से ही बता देना वरना.....

गुदडीः रहने दो कालीबेन, उसे जाने दो.... आगे आगे सबकुछ सामने आ जायेगा। अभी तो हमें ये जगह छोडने के बारे में सोच विचार करना पडेगा।

तितलीः इस में सोचना क्या? कोई नहीं उठेगा.... कोई नहीं बिकेगा! (सूत्र की तरह)

सलीमः पर ये तेरा खयाल है तितली! हमें सबके साथ बात करनी होगी। ऐसा करते हैं, कल इस मुद्दे बस्ती की एक मीटिंग रखते हैं।

मोहनः अरे, क्या ज़रूरत है? जो करना पडेगा वो तो करना ही पडेगा ना?....

गुदडीः बैठेंगें.... मोहन!.... सलीम सही कहता है। ऐसा ही करते हैं, कल रात, खा–पी कर सब साथ में पूरी बस्ती में अभी खबर कर देते हैं।

फेड आउट

दृश्य –4

(सुंदरी चणिया–चोळी पहनकर डिस्को डांडिया कर रही है। जे.जे. अलग अलग एंगल से उसके फोटों ले रहाहै। उसने भी दांडिया ड्रेस पहना हुआ है)

सुंदरीः फ्लोप शो.... फ्लोप शो..... फ्लोप शो..... फ्लोप शो.....
(यह शब्द सुनकर जे.जे. रूक जाता है)

जे.जे.: ऐं? ऐसा क्यों कह रही री, सुंदरी? इतनी सारी धूमधाम, इतनी सारी इश्तेहारबाजी, फिर भी तू कहती है कि 'फ्लोप शो'?

सुंदरीः (रूक कर) हज़ार बार कहूंगी –फ्लोप शो! पर पगले, मैं दांडिया शो फ्लोप है ऐसा कहा कहती हूँ? मैं तो कहती हूँ कि वायब्रान्ट का फ्लोप शो!

जे.जे.: शट् अप्! इतने सारे NRI पूरे शहर में घूम रहे हैं, उनका क्या?

सुंदरीः ओ.... उनमें से दो NRI तो हम ही है। बाकी को तूने कहां देखा? बस, मिडिया पे भरोसा कर लिया? जानता है, ये मिडिया भी उन वायब्रान्ट वालों की ही कमाल है.... मैं तो कहती हूँः

मिडीया की ये कठपुतलियां
नाच–कहो तो नाचें
उठ कहो तो, उठ जायें औ
बैठ कहो तो बैठें
घूमाओं जैसे घूम जायें औ
चूप करो चूप हो जायें
खुद तो कुछ ना कर पायें..... सरकारी सलाम बजायें!

जे.जे.: लिया वापस (नाक पे उंगली धर के) श्.... ज्यादा मुंहफट मत बन, तेरा ये नाच भी किसीने 'शूट' कर होगा.... तो शाम तक सारे देश में तेरा दु:दर्शन दिखा दिया जायेगा.... फिर स्टेट्स में जाना भारी पड जायेंगा।

सुंदरीः नहीं तो क्या? मैं तो यहां बस, दांडिया खेला करूंगी.... इस शहर में वह वाला शो कभी फ्लोप होनेवाला, चाहे तूफान आये, भूचाल आये, हत्याकांड हो जाये..... दांडिया कभी नहीं बंध होनेवाला। (नाचने लगती है)

जे.जे.: अब चल भी..... वरना फंक्शन में लेट हो जायेंगें तो सारे बिजनेस चान्स हाथ से निकल जायेंगें। आज हमें CM ने खास बुलवाया है। देखना, वहां इन्वेस्टरों का मेला लगा होगा, एक से एक प्रपोजल की बोली लग रही होगी....

सुंदरीः हां....(चिढ़ाती है) और, डॉलर–पाउन्ड की बरसात हो रही होंगी! क्यों? अरे जयंती जमीनदार उर्फे जे.जे..... होश में आओ। हकीकत कुछ और ही है, और हमें सपने कुछ और ही दिखाये जा रहे हैं।!

जे.जे.: तो क्या, सपने देखना –दिखाना पाप है?

सुंदरीः नहीं, मगर अपने सपने देखने के लिये किसी और की आंखें नोंच लेने को क्या कहोगे तुम?

जे.जे.: अरे सुंदरी! तू भी उन दंभी बिनसांप्रदायिको की, वामपंथीओं की गाडी में बैठ गई?! तू जलती है हमारी प्रगति से! हमारी समृद्धी से, हमारी आबादी से.... हमारी....(नेताजी की तरह दहाड रहा है)

सुंदरीः अरे जे.जे.!!! (प्रेक्षकों से) ये तो गया!!! इस पर तो वायब्रान्टवालें का रंग एकदम चढ गया लगता है!!! जे.जे. तू भी मंत्रीजी की तरह एकदम.... अहाहाहाहा .... ओहोहोहो.... (हो.हो.हो.. करके हंसने लगती है)

जे.जे.: (झल्लाकर) शट्अप! बहुत हुआ! तुझे मीटिंग में आना है या नहीं?... मैं तो चला.... आज लेट हो जाऊंगा तो जिन्दगीभर पछताऊंगा.... (विंग के अंदर मुड रहा है –सुंदरी उसे चिडाती हुई)

सुंदरीः फ्लोप शो..... फ्लोप शो..... (उसे पकड–कर खिंचती है)
(दोनों स्टेज पर दौड–पकड जैसा घूमते हैं –सुंदरी अलग अलग तरीके से गाती हुइ, चिढ़ाती रहती है)

फेड आउट

दृश्य –5

- पात्रः सुंदरी और जे.जे.

(सलीम और तितली किले की दिवार की कगार पर बैठे हैं। गंभीर मूडमें हैं। कुछ क्षण बाद तितली मूड बदलने की कोशिष में अपनी चोटी से सलीम के कानमें गुदगुदी कर रही है। सलीम बेचैनी से खडा हो जाता है। तितली अनमनी–सी हो जाती है।)

सलीमः (कुछ झल्लाहट से, कुछ गम से) देख तितली, तेरा मेरा साथ नहीं हो सकता। (तितली के चेहरे पर सवाल है) और तेरे चेहरे पर उभरते इस सवाल के कई जवाब मेरे पास है। एक तो यह कि तेरे दिलमें जो मेरे लिए खिंचाव है, मैं उस का जवाब नहीं दे पा रहा हूँ। मैं जैसे.... कुछ भी महसूस नहीं कर रहा हूँ। मेरे.... मेरे.... सारे नाजूक अहेसास..... मानों गूंगे हो गये हैं, और दूसरा यह कि.... (तितली अपनी हथेली से उसका मुंह बंद कर देती है)

तितलीः दूसरा–वूसरा कुछ नहीं। मुझे कोई सफाई देने की जरूरत नंही है, सलीम मैं तो खुद के लिए, मेरी अपनी चाहत के लिए तुझे चाहती हूँ.... जरूरी नहीं कि.... तुम भी मुझे....

सलीमः तो फिर मुझे से मिलने की जिद क्यों करती हो? तुम तो जानती हो कि तुम्हारे शोख मैं पूरे नहीं कर पाउंगा। मेरे पास ढंग का कोई काम नहीं है.... मैं तो.... मैं तो तेरा पेट भी पाल नहीं सकूंगा।

तितलीः सलीम, हमारे जैसी औरतें किसी भी मर्द को बहुत मुश्किल से चाह पाती है। और जब चाहती है तो अपने ही ढंग से चाहती है। अपनी ही शर्तों पर चाहती हैं। तुम्हें मेरी फिकर करने की कोई जरूरत नहीं। पर नूरचाचा और शरीफनबुआ अब थकने लगे हैं। आज तक उन्होंने तुम्हें हर हाल में संभाला है, अब तुम्हारी बारी है।

सलीमः मैं जानता हूँ तितली। पर अब के दौर में मेरे जैसे लोगों को काम मिलना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन लगता है। अव्वल तो मैं, हक्क की लडाई लडनेवालों में से हूँ। कोई मालिक मुझे पसंद नहीं करेगा। और अब तो यह हाल है कि मैं इस देश के खास नापसंद लोगों में से हूँ। अब तो यहां पे हमारा ज़िन्दा रहना ही बस, गनीमत समजो।
(अपने आप को बिखरने से रोक रहा है)

तितलीः (उसे प्यार से संभालकर) इसी लिए तो कह रही हूँ कि हम साथ साथ जियेंगें तो शायद एक दूसरे से ज़िन्दगी का मकसद भी हांसिल हो सकेगा। खैर, ये तो बताओं कि उधर किताबों की दुकान की उपरवाली खोली में तुम कई लोग मिल–बैठ के क्या करते हो?

सलीमः (उसकी आँखों में आँखें डालते हुए) सपने देखते हैं। बेहतर समाज के सपने.... आनेवाली दुनिया के सपने।

तितलीः आ..... हा... तो क्या तुम्हारे सपनों की दुनिया में हमारे जैसी औरतों के लिए कोई जगह होगी या नहीं?

सलीमः ऊंह! आनेवाली दुनिया में औरतों को तुम्हारेवाला धंधा कभी नहीं करना पडेगा। वह नफरत और ज़ोरों–जुल्म की दुनिया नहीं होगी.... प्यार और दोस्ती की दुनिया होगी।

तितलीः तो मुझे भी ऐसे सपने देखने का मौका चाहिए.... सपने.... तुम्हारे साथ साथ मैं भी देखूंगी।

सलीमः (प्यार से हाथ पकड लेता है, फिर जैसे कुछ सोचकर छोड देता है) ओह! मुझे उस पुल के नीचेवाले एरिया में जाना है, कलकी मीटिंग का ऐलान जो करना है। (निकलने लगता है)

तितलीः (हाथ खिंचकर इसरार करती है) फिर कब मिलेंगें, सलीम?

सलीमः (रूक जाता है, नजदीक आ कर) तितली, तुम्हें वहवाला गाना याद है? वैसे पुराना है....
(तितली सवालिया निगाह से देखती है) वह....
"ज़िन्दगी सिर्फ मोहब्बत नहीं, कुछ और भी है"
जुल्फों–रूख्सार की जन्नत नहीं, कुछ और भी है
भूख और प्यास की मारी हुई इस दुनिया में
इश्क ही एक हकीकत नहीं, कुछ और भी है...

तितलीः (टोककर) और तुम उसी गाने की वो वाली लाईन भूल गये क्यां?
"मेरी बात और है, मैंने तो मोहब्बत की है...."
(सलीम कुछ हंसते हुए, कुछ सोचते हुए उसके बाल झंझेडकर जल्दी से निकल जाता है। तितली प्यारभरी नज़रों से उसे देखती खडी रह जाती है)

फेड आउट

दृश्यः –6

(बस्ती में मीटिंग होनेवाली है। काली, भीखू, नूरभाई, शरीफ़ा, तितली, गुदडी, फूलीबाई, बिजया वगैरा तैयारी में जुटे हैं। कोई "झोपडपट्टि एकता कमिटी" का बेनर बांध रहा है। कोई दरी बिछा रहे हैं। कोई पीने के पानी का पीपा रख रहा है तो भीखु अलग–अलग तरह की कुर्सियां लाकर रख रहा है)

कालीः अबे भीखले, कुर्सी–वुर्सी की कोई जरूरत नहीं है। यहां कौन से मुवे मीनीस्टर आनेवालें हैं गे? हटा दे ये सब कबाडा। (पैर से खदेडती है) (भीखु खिसियाना होके हटाने लगता है)

गुदडीः अरे कालीबेन, गुस्सा क्यों करती हो? भीखु तो बेचारा आदत का मारा है। उसे तो सिर पे केसरिया पट्टा बांध के नेताजीओं की मीटिंगों में कुसी रखने की रोकडी होती है ना?! क्यों बे भीखु, आजकल तुम्हारे दादासाहेब आणी कंपनी ची मीटिंग वीटींग नहीं

हो रही है क्या? फिर तो रोकडी के वांधे पड गये होंगें। (भीखु खिसीयानी हंसी हंसके कुर्सी हटाता है)

(तितली अन्यमनस्क सी जाके एक छोर पे सलीम की राह देखती है)

कालीः ऐ, अनारकली, उधर क्या देख रही है? पिछवाडे के वास की औरतों को बुलाके आ ना? इन्हें तो चार बार बुलाना पडेगा। (तितली पकडा गई हो इस तरह लजा कर दौड जाती है)

गुदडीः (उसे देख के हंस कर) अरे, अपना सलीम कहां रहा गया? उसे तो कबसे आ जाना चाहिए था! उसवाले एरिया की बस्ती के मेम्बर भी नहीं दिख रहेले। बात क्या हुई? मीटिंग का टाईम तो हो चला। (बेचैनी से चक्कर काटता है)

शरीफाः (गुदडी की चिंता भांपकर) गुदडीबाबा, कैसा जमाना आ गया है? अपने वास्ते, अपने भले के वास्ते, सोचने के लिये हम मीटिंग बुलायेंगें, पन यहां तो जैसे किसीको पडी च नहीं होगी। हम कभ्भी भी इकट्ठा कायको नहीं हो रियेले?

नूरभाईः बी, सब के सब डरैले है। इकट्ठा होनेका डर, हक मांगनेका डर, आवाज उठाने का डर... सब के मन में खौफ घूस गया है कि अब तो हमको कभी इन्साफ मिलनेवाला नहीं है।

गुदडीः सही कहे रहे हो, नूरमियां! पिछले कुछ सालों से इस देश में, इस शहर में जिस तरह का राज चल रियेला हे, उसमें तो जैसे गरीबों को तो सांप सूंघ गया है।

कालीः (बिफरकर) तो इस सांप को कुचल के रख देंगें। मैं तो कहूँ के पेले के दिनों में इसी बस्ती में हम कैसी कैसी तो मीटिंगें करते थे?! जब पानी की चकलिया चाहिये थी..... तो बुला लो मीटिंग! लाईटें लगवानी हैं, बुला लो मीटिंग! मिल कामदारों को अन्याय हो रिया है.... बुला लो मीटिंग! कैसे तो लाल झंडावाले आ जाते थे..... उसे क्या कहके बुलाते थे? मुवा मैं तो भूल गई..... अब किसीको बुलाने की आदत नहीं रही ना?!.....

गुदडीः लाल झंडेवाले को बिरादर कहते थे..... बिरादर!

कालीः हां.... वोहीय.... कैसे आते थे... जोशभरी बातें सुनाते थे.... और शरीफ़ाबेन उसवाले गाने भी तो कैसे कैसे थे.... बिलकुल अपनी बात वालें.....

शरीफाः और क्या? हम चट से सिख जाते थे.... और गला फाड के गाते थे।

कालीः हर जोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है.....

शरीफाः तुमने मांगें ठुकराई है, तुमने तोडा है हर वादा....

नूरभाईः छीना हम से सस्ता अनाज, तुम छटनी पर हो आमादा....

गुदडीः लो अपनी भी तैयारी है, लो हमने भी ललकारा है.....

सभीः हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है!!!
(तितली और कुछ लोगों को लेकर आती है, सारे गाने लगते हैं।)

गुदडीः (निःश्वास लेकर) संघर्ष हमारा नारा है.... अब तो जैसे न तो संघर्ष करनेवाले रह गये हैं.... न नारे लगानेवाले! (ईधर उधर देखकर) पर अभी वो सलीम क्यों नहीं आया? और वह मोहन? उसे गर मोहल्ले का लीडर बनने का दावा है तो मीटिंग में तो हाजर रहना चाहिए ना?

कालीः वो मोनिया तो गया होगा नेताओंकी गांड में घूसने। उसको तो जिसके तड में लड्डू–उसके तड में हम! उसकी राह कोई नहीं देखेगा!.... ये लो, अपना नया लीडर आ गया.... क्यों बे सलीमडे, कहां जख मार रहे थे अब तक?

सलीमः (दौडता हुआ आया है इसलिये हांप रहा है) कालीमौसी, गुदडीबाबा, गजब हो गया! (सब उत्सुक)उधर, उस पुल के नीचेवाली बस्ती में बडी बबाल हो गई है। मैं वहीं पे फंस गया था।

गुदडीः पर हुआ कया?

सलीमः उधरवाले कई लोग जिस फेक्टरी में काम कर रहे थे, उस को एकदम ताला लग गया।

सारेः हैं? अचानक क्या हुआ? क्यों? काय के वास्ते?

सलीमः मालिकोंने धंधा बदल दिया। वहां के लोग बता रहे थे, कि उसकी साबून की फेक्टरी खोट में चल रही थी। तो उसने बेच दी और रूपये बटोरकर परदेस घूमने चला गया। (लोग ओह–आह करते हैं)

नूरभाईः (थूंकता है) चोर कहीं का!

सलीमः और तो और, कामदारों को छै छै महिने की पगार तक नहीं मिली।

शरीफाः लोकल्लो बात। एक तो इतनी महंगाई, उपर से आ गयेले दंगे, वो बरबादी क्या कम थी कि ये बेकारी आ पडी?!

गुदडीः अजीब तमाशा है! एक ओर सरकार ने देश–परेदेश से लोगों को बुलाया है कि पूंजी लगाओ, धंधे बढ़ाओं.... और इधर ये हाल है कि जो कुछ भी चल रहे थे वो धंधे ठप्प हो चले हैं।

नूरभाईः गरीब को और भी गरीब बनाओं.... ये ही तो उनका फायदा है!

कालीः और उस पर.... ये घरबार खाली कराने की घौंस! हम लोग जायेंगें कहां? जियेंगें कैसे?

फुलीबाईः तो क्या ए मीटिंग में वो लोग नहीं आयेंगें?

सलीमः नहीं, कुछ लोग आ रहे हैं। पर कुछ लोगों को अंदर कर दिया है, इस लिए ज़रा गरबड हो गई।

सारेः अंदर कर लिया?.... धरपकड?..... हाय–हाय..... काय के वास्ते?

सलीमः उन में कुछ लोगों ने गुस्से में आ के फेक्टरी का ताला तोडने की कोशिष की, तभी पुलिस आ गई और सबको ले गई।

कालीः अब लोग आखिर लोग है, कोई लकडी–पथरां थोडी ना है?! इतना सारा होने पर कुछ तो बबाल करेंगें च ना?

गुदडीः बेशक, पर अब तो हालात और भी बिगडनेवाले हैं। ऐसी धरपकडें और भी होती रहेंगी। समज लो, तुम्हारा सब कुछ छिन जायेगा पर चूं तक नहीं कर पाओगे।

सलीमः और नही ंतो क्या? अभी कुछ दिन पहले मजदूरों की हड़तालों पर पाबन्दी आ गई। अखबार में पढ़ा कि कलकत्ते में रेली, सरघस पर रोक लगा दी गई हैं धीरे धीरे करके मजदूरों के हक छिन रहे हैं।

शरीफाः और गरीबों का दम घोंट रहे हैं।

सलीमः (बिफरकर) मगर हम घूट घूट कर मरनेवालों में से नहीं है। चाहे जो भी हो, हम सामना करेंगें, हम जरूर लडेंगें।

(वह जोश में आ कर हाथ उठा देता है। पर लोग उसके साथ जुडने से कतरा रहे हैं, कुछ सोच रहे हैं।)

गुदडीः सलीम बेटे, वैसे तो हमने अपनी बस्ती को बचाने के लिए यह मीटिंग बुलाई थी पर लगता है अब तो हमें बहुत कुछ बचाना है, अब सिर्फ हमारी ही बस्ती नहीं, कई बस्तियां.... कई लोगों की रोजी–रोटी, घर–बार.... जिन्दा रहने का हक बचाना होगा..... इस समाज को..... इन्सानियत को भी बचाना होगा.... सचमुच.... एक नयी लडाई की तैयारी करनी होगी..... (सोच में पड जाता है।)

(वह डफली उठाकर, नदी की तरफ मुंह कर लेता है, फिर घुम कर लोगों से जैसे कहता है)

गीत –3

नदिया ओ नदिया.... ओ रे हमरी नदिया
तुझ से सिखें बतियां.... ओरे हमरी नदिया –2

जब कुत्ते पे सस्सा आया.... तब बा'शाहने शहर बसाया

तब से लडने भिडने का, तुमसे हमने सबक है पाया
डरना मना है – पल पल कहता तेरा पानी, मैया.... ओ रे.

एक तरफ बहता है पसीना, दूजे ऐश उडायें
तू ही बता हम ऐसा करें कुछ, सबको सब मिल पायें
तुझसे सिखे ऐसा करतब, सब के लिए हो छैंया.... ओ रे.

कुछ लोगोंने तेरे दिल पे ऐसी चलाई छूरी
इतने सारे पुल बनाये, फिर भी गई ना दूरी
तू भी शायद सोचती होगी
कब बदले यह रवैया!
बदले कौन रवैया..... –3

(धीरे–धीरे लोग जुडते जा रहे हैं और अलग–अलग बैठे हुए थे वह जूथ में खडे होकर गाने लगे हैं।..... सामने की तैयारी कर रहे हैं।)

फेड आउट

दृश्य –7

(जे.जे. एप्रन के एक कोने पर सीडी खडी कर के उसके उपर खडा है, हाथ में जैसे तीर कमान हो, वैसे बडे निशान तांककर खडा है। नीचे सुंदरी कमर पर हाथ रखके उसे देख रही है।)

सुंदरीः अबे ओ जे.जे.! वहां क्या कर रहा हैं?

जे.जे.ः निशाना ताक रहा हूँ, ऊंचा.... ऊंचे से ऊंचा निशाना। कहा है ना, Aim high, as high as you can.... हमेंशा ऊंचा निशाना होना चाहिये।

सुंदरीः अच्छा? पर ऊंचा निशाना किस बाते के लिए?

जे.जे.ः अपने बिजनेस के लिए। लगता है सुंदरी, अब दांडिया की सिजन गई और दिवाली की भी गई... सारे पटाखें टांय टांय फिस्स...

जे.जे.ः इस शहर में हमारी दाल नहीं गलनेवाली.... हमें और कहीं जाना होगा।

सुंदरीः क्यों?

जे.जे.ः देखो ना, ये लोग तो नदी बेचने पर ना जाने कब राजी होंगें? और ये वायब्रन्ट टायरन्ट को भी अब कोई उतावली नहीं है, जाने कौन सी नींद में सो गये हैं....

सुंदरीः शायद और कोई यात्रा की तैयारी कर रहे होंगें।

जे.जे.ः हां, और फिर तो हमारा विज़ा भी खत्म हो जायेगा..... हम ठनठन गोपाल ही वापस जायेंगें क्या? उधर देख, छत्तीसगढ में तो कब की नदी बिक गई। वहां तो फेक्टरियों का जंगल उगने लगेगा..... उधर आंध्रप्रदेश के वायब्रान्ट टायरन्ट तो कब से तडप रहे हैं.....

सुंदरीः हां, अबतक तो उनके वो घाव भी भर चले होंगें।

जे.जे.ः श्... (नाक पे उंगली रखके) कोई सुन लेगा! अब कुछ रास्ता ढूंढना पडेगा। (सोचने की मुद्रा में दोनों लगते हैं)

सुंदरीः हां..... चलो, पश्चिम की ओर....

जे.जे.ः पश्चिम की ओर? वह क्यों?

सुंदरीः क्यों कि उधर समंदर है। विशाल समंदर। वायब्रान्ट समंदर! वह भी छोटा मोटा नहीं पूरे 1600 किलोमीटर का अथाह समंदर।

जे.जे.ः है तो..... फिर उसका क्या करेंगें?

सुंदरीः उसको खरीद लेंगें। तुम कहते थे ना निशाना ऊंचा चाहिये, हम नदी नहीं, समंदर खरीदेंगें।

जे.जे.ः पर वह तो उन अंबाणीका हो चुका है।

सुंदरीः अरे तो क्या हुआ? हम उनसे हाथ मिला लेंगें। फिफ्टी–फिफ्टी ही सही! पर हम समंदर खरीद लेंगें। उसको मथ डालेंगें। उसमें से तेल निकालेंगें/मछलियां निकालेंगें। मगरमच्छ निकालेंगें

जे.जे.ः (ऊत्साह से) अरे हम पूरे समंदर को सोख डालेंगें। हम रेत को भीगो डालेंगें। हम जल पर स्थल और स्थल पर जल कर डालेंगें.... आहाहाहा.... ओहोहोहो....

सुंदरीः हम वहां कई मायानगरी बसायेंगें.... डोलरनगरी बनायेंगें.... हम अरबपति हो जायेंगें हम खरबपति हो जायेंगें....

जे.जे.: छोडो इस रूखीसुखी, दुबलीपतली, नदीको... जिसका नाम भी अब तो बदल जायेगा.... हम चलें समंदर की ओर.....

सुंदरीः प्यार की कश्ती में, लहरों की बस्ती में..... नशें में चूर.... गगन से दूर.... हैया हू.... हैया हू.... हैया हू..... (दोनों नाचने लगते हैं।)

जे.जे.: (रूक–कर) ऐ... सुंदरी! ये हम क्या कर रहे हैं? हमें तो यह नया साहस सोमनाथ से शुरू करना चाहिये।

सुंदरीः सोमनाथ? वहां से क्यों?

जे.जे.: सारे वायब्रन्ट अभियान तीर्थयात्रा से ही शुरू होते हैं। याद नहीं, सबसे पहली यात्रा सोमनाथ से ही निकली थी। फिर हम भी तो समंदर जीतने चले हैं.... हम भी सोमनाथ से ही आरंभ करेंगें.... एक पंथ, दो काज!

सुंदरीः येस... ये तो बहुत ही वायब्रन्ट आईडिया है! तो चलो चलें, हां चलें...(वहीवाला गीत गाने लगती है)

जे.जे.: ऊंहूं..... वह नहीं –कहो जय सोमनाथ!

सुंदरीः (नारे की तरह) जय सोमनाथ!
(दोनों जैसे यात्रा पर निकले हों वेसे दंडवत् नमस्कार करते हुए मंच पर लेट जायेंगें)

फेड आउट

दृश्य –8

(बस्ती में ढलती हुई शाम का अंधेरा। ऐरिया खाली पडा है। लपकता हुआ भीखु बाहर से आता है। इधर–उधर देखकर विंग में से किसीको इशारा करके बुलाता है। गेणुदादा आते हैं। दोनों गुदडीवाले खाली ओटे पे बैठ जाते हैं।)

दादाः देख भीखु, अब मेयरसाब ने ऐलान कर ही दिया है तो समझो की बात पक्की ही है। हजार दिन दिये थे ना, वो तो यूं, चुटकी में नीकल जायेंगें। फिर मत कहना कि दादाने बोला नहीं था... हां!

भीखुः (कानपट्टी पकड के) नहीं, नहीं दादा! आप जैसा कहेंगें वैसा ही होगा। (जेब से बीडी निकाल के देता है, दोनों बीडी पीते है)

दादाः हां.... तो फिर सुन लो। तुम्हें बस्ती के लोगों को समझाना होगा कि महिनेभरमें ये जगह खाली कर दें। चिपके रहोगे तो जीनेका वांदा पड जायेगा..... और हमारी बात मान लेंगें तो चांदी ही चांदी हो जायेगी.... क्या बोला?

भीखुः पर मेरी बात ये मानें तब ना?.....

दादाः कायकु नहीं मानेंगें रे? बडे साबने खुद बोला है कि सबको उधर नयी जगह मिलनेवाली च है। झकास सौदा पटने वाला है..... क्या बोला? सबको पता कर दो, बोरिया–बिस्तर बांध दे..... वरना...

भीखुः पर नयी जगह के वास्ते पैसा भी पडेगा ना? तो मैं चंदा जमा कर लूं? घर दीठ.... (लालच से देखकर) ले लूं?

दादाः हाओ, घर घर से पान्चसो पान्चसो ले ले।

भीखुः बस? फिर इसमें से मेरा कितना टका निकलेगा?

दादाः (हंसते हुए उसकी पीठ पर धौल जमा कर) अबे मांके..... तू भी साला बडा भुख्खड दिखता है ने! ठीक है, जा –तेरी मनमरजी की रकम ले लेना। तू भी क्या याद रखेंगा कि दादा के साथ काम किया था। वैसे.... तू काम का आदमी है बीडू।

(तभी बाहर काली की "जूनां कपडां...." की पुकार सुनाई देती है। भीखु चौकन्ना हो जाता है पर काली आ धमकती है और दोनों को देखकर उसके तेवर बदल जाते हैं।)

कालीः क्योंरे भीखले, इस जमदूत के साथ क्या खुसरपुसर हो रही है?

भीखुः (सर पकाकर) अरे काली, ये दादा तो अपने फायदे की बात लेकर आये हैं।

कालीः (गरज के) अरे कैसा फायदा और कैसी बात! मुए को देखकर ही मेरा कलेजा धक् से हो जाता है! मैं सब जानती हूँ। पिछले दंगों से पहले भी ये सांड अपनी बस्ती को सूंघने के वास्ते चक्कर काट रिया था।

दादाः (जल्लाकर) ऐ भाई! मरद लोगों की बात में टांग नंइं अडाने का.... क्या बोला?

कालीः आयहायहाय! मरद का घर चलावे औरत, अपनी जात घिस दे औरत, तो फिर क्यों नहीं बोलेगी? मूवे–हलकट! निकल यहां से –रास्ता नाप.... (भीखु को घसीटती है) भीखले..... तू भी निकल!

दादाः अबे हरमजादी, बहोत बोलेगी तो खल्लास हो जावेगी... तू तो तू पर तेरी सारी बस्ती पे बुलडोज़र चलवा देंगें.... बुलडोज़र!

कालीः अरे, वैसे भी हर औरत पे रोज रोज बुलडोज़र चलता ही रहेता है, सारे मरद अपनी घरवाली के लिये धसमसता बुलडोज़र ही है ना?

भीखुः देखो, दादा मैं ने कहा था ना.... ये कालकामाता मेरी एक न मानेंगी।

दादाः अरे, ना माने तो खल्लास कर दे.... क्या बोला?
(वह मज़ाक कर रहा है पर उसका वाक्य आधा ही है कि काली दोनों को गालियां देती हुई खदेडने लगती है)

कालीः अब तो तू जा ही यहां से.... मुए मांके..... भैण के..... तेरी तो.... तू होता कौन है हमारी जिन्दगी में कांडी मेलनेवाला.... (भीखु से) और तू तो यहां आना च नहीं.... निकल..... निकल जा....
(दादा दनदनाता हुआ निकल जाता है पर भीखु बेशरम हंसी हंसता हुआ काली के पास बैठ जाता है)

भीखुः अरी मेरी काळका मा.... सुन तो सही.... दादा तो इसके वास्ते आया था कि हम ठीक टेम पे ये जगा खाली कर दें ताकि यहां अच्छे–अच्छें बागबगीचे हों, खेलनेका पार्क हो, सिनेमा थियेटर हो....

कालीः तो? इसमें अपणेकु क्या? ये सब क्या अपणे वास्ते होरिया है? हम को खदेडने की चाल है चाल! मुवे इतना भोला मत बन, और मुझे भी इतनी मूरख मत समझ।

भीखुः अरे पर, सरकार अच्छी रकम देनेवाली है.....

कालीः (नकल करके) अच्छी रकम? अरे करोडों का नफा होनेवाला होगा तभीच हमें हजार रूपल्ली देगा ना?..... पर चाहे लाखो रूपिया दे दे.... यहां से हम कहीं नहीं जाने वालें!

भीखुः अरे, यहां हमारी कोई जिद नहीं चलनेवाली! छोड–आचार्यजी जब इधर मीटिंग करेंगें तब सारी बात सबके भेजे में उतरेंगी.... गधे कहीं के.....

कालीः क्या? क्या? क्या? आचार्यजी? यहां मीटिंग करनेवाले हैं?

भीखुः हां..... दादा ये च नक्की करने कु आये थे....

कालीः खबरदार..... उन जमदूतों की यहां कोई मीटिंग नहीं होगी।

भीखुः होगी.... और जरूर होगी।

कालीः नहीं होगी, और अगर होगी तो हम औरतों की एक मीटिंग मे बुलाऊंगी।

भीखुः नहीं, मीटिंग होगी तो वह आचार्यजी की ही होगी।
(तभी दूर से गाता हुआ गुदडी आता है)

गीत –4

गुदडीः अरे, नहीं बनती.... नहीं बनती.... भई! बुंद से बिगडी नहीं बनतीं!

बडे बडे हौज रचावे मोर रसिया –2
इत्तर फौवारे उडावे मोर रसिया –2

पर.... खून की बदबू नहीं हटती, भई!....

बडी बडी कोठियां बनावे मोर रसिया –2
बिजली की लडि चमकावे मोर रसिया –2

हम गरीबों की रतियां नहीं कटती, भई!.....

(काली यह गाना सुन के खिल उठती है और जुड जाती है)

फेड आउट

दृश्य –9

(बस्ती की दुपहर। शरीफा, फुलीबाई, तितली वगैराह सिर्फ औरतें ही बैठी हुई हैं। काली सबको संबोधन करती है। ओटे पर एक भद्र महिला –संस्था की कार्यकर नीमाबहन –बैठी है।)

कालीः देखो बेनों, आज हमारे बीच ये जो हैं, वह नीमाबेन हैं। तुम लोग शायद नहीं जानते पर मैं कई सालों से उनको जानती हूँ। वो हमारे जैसी बेनों के लिए काम करती हैं। जब हमारे जैसी बेनें मुसीबत में होती हैं तो वो साथ देती हैं। सरकारी कागज, कोरट–कचेरी सब अपने वास्ते वे जाके करती हैं।

तितलीः (मज़ाक में) बहुत हुआ कालीबेन! अब उस बेन को भी बोलने का मौका दे दो।
(काली खुद हंस देती है, नीमाबेन को खडी करके खुद नीचे, औरतों के साथ बैठ जाती है)

नीमाः (उठके) मेरी प्यारी बहनों! जैसे कि कालीबेनने बताया, हम तुम्हारे साथ हैं। हमारी संस्था गरीब बहनों के लिए काम करने की वजह से सारे देशमें, दुनियामें विख्यात हैं। आज–कल करके बीस–बीस साल से हम यह काम करते आये हैं। सबसे पहले हमने इस शहर की कामगार बहेनों को इकट्ठा कर के....

शरीफाः (उतावली से, बीच में काटके) वो सब तो ठीक है, पर तुम्हें हमारी इस तकलीफ के बारे में तो पता है ना?

नीमाः (खिसीयानी हंसी के साथ) पता है, पता है, कालीबेनने मुझे सब बताया है। मैं अभी उसी मुद्दे पर आती हूँ।

तितलीः तो पहले ही आ जाओ ना..... यहां वक्त किसके पास है?

नीमाः ठीक है। हां, तो मुद्दा था इस नदी किनारे के विकास का, बहनों, नदी हमारे शहर की शान है। वह सिर्फ पानी का सोर्स ही नहीं है। हमारी जान भी तो है। अब जब अपनी इस नदी को सुंदर बनाने की, सजाने संवारने की जिम्मेदारी हम पे आ ही गई है तो, सबसे पहले हमें इस योजना को समझ लेना चाहिए और फिर उस कार्य में अपनी भूमिका क्या होगी यह भी जान लेना चाहिए।

शरीफाः (चिंता से) मानें, आप भी ऐसा ही समझती है कि यहां पे वो बाग–बगीचेवाला तमासा हो जायें?

कालीः (अधीरता से) अरे नहीं, शरीफा, मैं ने नीमाबेन को पहले से बता रखा है कि, ये योजना हमारे वास्ते नुकसानकारक है।

नीमाः पर कालीबेन, बात को ज़रा पुरी तरह समझनेकी कोशीश हम सब को करनी चाहिए। हम नागरिकों का फर्ज बनता है कि तमाम योजनाओं को समज लें। योजनाएं कभी विनाश के लिए नहीं होती हैं। हमेंशा विकास के लिये ही होती हैं। रही बात अपने छोटे–मोटे नुकसान की, तो उस के लिए भी हम अवाज़ उठायेंगें।

शरीफाः पर हम यहां से जानाच नहीं चाहते हैं। क्योंकि कुल मिलाकर हमें घाटा ही घाटा है। देखो बेन, हम सब की रोजी–रोटी इस बस्ती के आस–पास में ही है।

तितलीः हां, जैसे कोई बेन यहां नजदीक मे बर्तन–पोंछा करने जाती है तो कोई बडी मंडी से लाके, इधर की पोलों में सब्जी बेचने जाती हैं, कोई छोटी–मोटी चीजें बना के यहीं पे बेचती है, ये काली मौसी जैसी पुराना कपडांवालीओं का धंधा भी इधर उधर ही च है।

कालीः हां..... और तो और–हमारे मरद लोग भी इधर–उधर ही कुछ काम–धाम ढूंढ के रोजी कमाते हैं। और अगर यहां से उठ गये तो समझो, भूखमरी चालू!

नीमाः नहीं, नहीं..... नई जगह पर हमारी संस्था आप सब बहनों को रोजगारीके नये साधन देंगी। जैसे सिलाई मशीन, भरतकाम, कागज की थैलिया बनाना, बिंदी बनाना..... वगैरहा वगैरहा। फिर बच्चियों की क्लासें शुरू होंगी, रातको बडीवाली बहनों की पढाई चलेगी.... नया स्कूल मिलेगा, बालवाडी भी होगी और बहनों की प्रवृत्ति के लिये महिला मंडलका नया मकान भी होगा।

तितलीः ऐ बेन, ये सारा नया नया बेनों को ही दिलवाओगी तो घर में तो झगड़े हो जायेंगें....

नीमाः अरे, हम आप सब औरतों को ही ऐसे तैयार करेंगें, पगभर करेंगें की सारे निर्णय खुद आप कर सकें।

शरीफाः ओ तो ठीक है पन मरद बेचारे काम–काज कैसे पायेंगें?

नीमाः वह सब तो होगा ही..... पर सही शक्ति तो बहनों मे ही होती है! हम उसी छिपी हुई ताकत को बाहर निकालेंगें और फिर हमारी संस्था वैसे भी बहनों के साथ ही काम करती है ना?!

कालीः हां, मैं जानती हूँ, तभी च तो तुमको इधर बुलाया। पर मैं समझी के तुम लोग केस–वेस कर के इस कलमुंही योजना को रूकवा ही देंगें।

नीमाः नहीं बहन, संस्थाएं तो योजनाओं को लोगों तक सही रूप में पहूँचाने के लिए बनी है।

तितलीः पर लोग ही ना चाहें तो?

कालीः भई, मेरी तो सौ बात की एक बात! ऐसी योजनाओं से हम जैसों को बहुत ही नुकसान है। पूछो अपनी फूलीबाई से। वो उधर नरबदा डेमवाली जगह से आई है.... पूछो –क्या फायदा मिला है?

(तितली, शरीफा अपने पीछे दुबककर बैठी हुई आदिवासी औरत फूलीबाई को उठाती हैं)

शरीफाः बोल दे, फूलीबाई.... बोल दे अपनी बात.... बता दे सब कुछ....

फूलीः (पहले कुछ झिझकती है, फिर आदिवासी लहजे में बोलती है) मैं उधर से –दस वरस हो गये –उठ गये–

नीमाः हां, हां.... पर आप लोगों को तो नयी जमीन, नये मकान सब कुछ दिया गया है ना? कितना अच्छा पुनर्वसन हुआ है आपका?....

फूलीः (हिंमत से) ऊंहूं..... जमीन कुछ नहीं..... टापर मिले थे, टीन के टापर.... फिर कामकाज कुछ नहीं..... भूखमरी..... बिमारी..... सब इधर आ गये.... रोड रस्ता बांधने.... बंगला फ्लेट बांधने....

कालीः (उचक्कर) सुना तुमने? ये तो सरासर अन्या' ही है ना?

(तभी 'विंग' में ऐप्रन परकुछ गडबड सुनाई देती है। मर्दों की आवाजें हैं। कुछ पल के बाद सारे मर्द ऐप्रन पर दिखाई देंगें।) (गुदडी, नूरभाई, मोहन)

गुदडीः भई मोहन, वहां बहनों की मीटिंग चल रही है। सिर्फ बहनों की मीटिंग।

मोहनः (गुस्से से) क्यों? ऐसी कौनसी मीटिंग है ते?

गुदडीः .... बैठी हैं। अरे, किसी संस्था से बहन आई है और वह चाहती है कि हम वहां ना बैठे! और तो और . मुझे तक भगा दिया! (हो–हो हंसता है) उपर से मेरी ही जगह पर आसान जमाये

मोहनः है) (देखके) अरे.... ये बहन यहां क्या कर रही है? (दूसरों को हटा के मंच के बिच आ जाता नमस्ते बेन! (उसकी आवाज़ में उध्धत तिरस्कार है) आप यहां कैसे?

नीमाः यहां..... मुजे कालीबहनने बुलाया है। बस्ती की जगह पर जो विकास योजना होनेवाली है, उसी सिल–सिलेमें....

मोहनः हां, हां, पर वह सब तो हमारे द्वारा हो रहा है।

नीमाः होगा। पर कालीबेन चाहती थी कि हमारी संस्था इस मुद्दे पर काम करें।

कालीः (भडककर) आयहायहाय.... पर ये मुई कालीबेन ये नहीं जानती थी कि सनस्था भी सरकारी वरघोडे में बाजा बजायेंगी।

नीमाः मिलेगा। (धीरज से) पर बहन, मैंने बताया ना कि सरकार का ऐलान है कि आप को इन्साफ

तितलीः रोजी–रोटी वाले। अरे छोडो भी! सरकारने तो कई ऐलान किये हैं। कौनसा इन्साफ मिला है हमें? बताओः– गरीबी हटाओ–गरीबी हटाओ चिल्ला रहे थे.... हटी गरीबी? सबको पढ़ाई मिलेगी, मिलेगी, इज्जतकी जिंदगी मिलेगी.... मिला कुछ भी? बडे आये ऐलान

गुदडीः मज़ाक (ऐप्रन पर बिचमें ही है) मंदिर बनायेंगें..... मंदिर बनायेंगें.... बना पाये? (आंख मिंच कर करता है।) (सारे हंस देते हैं।) (निमीबेन चूप)

मोहनः आज–तक नंखवाये.... सब.... तितलीबाई, शांति रखो। मुझ पे भरोसा रखो। मैंने इस बस्ती के लिये कितना कुछ किया है?..... ये पानी के नल आये, बिजली के खंभे आये, जाजरू

कालीः ए .... खोट्टाडा! मोनिया! ये.... ये.... सब तूने करवाया?

तितलीः ऐ लुच्चे..... किसकी आंखो में धूल झोंकता है?

मोहनः हिल–मिल (सकपकाकर) मानें..... मेरा मतलब है.... हम सबने मिलके किया.... हिल–मिल के.... के....

नूरभाईः देख भाई, ये सारी हमारी लालझंडा लडत की कमाई है। हम एकता रखते थे, जूलूस निकालते थे, मटका सरघस लेकर मुन्सिपालिटी तक जाते थे, लाठीमार खाते थे.... तब यह सब मिला था.

गुदडीः और वह भी..... आज से बीस साल पहले! तब तो तेरी ये दाडी–मूंछ भी नहीं निकली थी.... बच्चे! (संब हंस देते हैं।)

कालीः ना, ना, सौ बात की एक बात! इस मामले में तू क्या भडाका कर देगा, वह अभी से बोल दे, मोनिये! फिर तुज पे भरोसा होगा।

नीमाः अरे बहन, ये लोग अपने फायदे की ही सोचेंगें, मर्द जो ठहरें! आप हमारी बात मानेंगी तो इस विकास योजनामें नया रंग आयेगा.... महिलाओं की सहभागिता का रंग।

मोहनः बस, बस आप महिला संस्थावाले ये ही करेंगें.... घरमें फूट और झंडा ऊंचा।

नीमाः और आप लोगोंने भी ऐसा कौनसा तीर मारा है? हम जानते हैं, महिलाओं की स्वाधीनता आप को फूटी आंख नहीं सुहाती।

मोहनः देखिये बेनजी! चूप–चाप यहां से निकलिये, वर्ना....

नीमाः वर्ना क्या कर लोगे?

मोहनः जो नहीं होना चाहिये वैसा कुछ।

नीमाः इतनी दादागिरी?

मोहनः हां, इतनी दादागिरी।

नीमाः मैं नहीं जाऊंगी..... मीटिंग आगे चलाऊंगी। मेयर साहब को बुलाऊंगी, वे खुद औरत हैं तो औरतों की तकलीफ समझेंगें.....

मोहनः नहीं होगी मीटिंग, कोई नहीं आयेगा।

नीमाः होगी.....

मोहनः नहीं होगी.....

(यह तू तू मैं मैं चल रही है पर लोग तो वहां से खिसकने लगे हैं। गुदडी भी ओटे पर जाके, अपनी गुदडी झटकाता है और खडा होके ललकारता है)

गुदडीः अपना–अपना मतलब देख के कूद पडे ये कैसे लोग? बंदर कोन है? बिल्ली कौन है? औ पायेगा रोटी कौन?!

फेड आउट

दृश्य –10:

(गुदडी अपने ओटे पे बैठ कर अपनी नयी सी गुदडी को उधेड रहा है और गा रहा है)

गुदडीः बनते बनते जुग बिते, औ' उधडे पल–छिन मांय,
हाथ हाथ में फर्क है, दानत हो सो थाय.....

शरीफाः (हाथ में घरका सामान लेकर बाहर से आ रही है, गुदडी को देख कर बौखला के उसके पास जाती है) आयहाय, बाबा! ये क्या कर रहे हो?

गुदडीः (अपना हाथ रोके बिना) जो तू देख रही है!

शरीफाः अरे पर, क्यों?

गुदडीः मटिया–मेट ये ही होगा.... ऐसा ही होगा .... इस बस्ती का, इन घरबार का..... देखते ही देखते हो जायेगा..... शैतान आगे जा पहूंचेगा–इन्सान लेट हो जायेगा।

शरीफाः आयहाय! ऐसी बद्दुआ क्यों उगल रहे हो, पगले?

गुदडीः बद्दुआ ही एक दिन दुआ को खिंच लायेगी..... देख लेना!

शरीफाः पहेलियां क्यों बुझा रहा है? जो कहना है, कह भी डाल।

गुदडीः अब शरीफन बी..... गुदडीयां बनाते बनाते तुम सबकी अकल भी गुदडी ताने सो गई लगती है! तो जागो, ऐका करो..... कुछ ऐसा करो कि ये बस्ती बच जायें!

शरीफाः रकम बाबा, सच्ची कहूँ?! मुझे तो कभी–कभी बहुत डर लगता है। पर खाली नहीं करेंगें तो वो नासपिटे.... कुछ भी कर सकते हैं..... फिर खाली करवाने पर नयी जगह देंगें.... देंगें.... ऐसा भी बोला है।

गुदडीः प्लास्टिक (खडा हो जाता है, दहाडता है) हाक्..... हाक्.... देंगें, देंगें, जरूर देंगें। टीन के टप्पर के छप्पर..... जय राहत मैया! भर जायेगा तेरा खप्पर! हाक्..... हाक्.... अरे

कमबख्तों! ये चिंदिया चुन चुन कर जीनेकी आदत से तुमने जिन्दगीयों की भी चिंदिया बना दी है..... चिंदि चिंदि.... धज्जी धज्जी....! अरे सालों! कभी तो अख्खे लिहाफ ओढ के देखो! कम से कम अख्खे लिहाफका सपना तो देखो! (फिर से गुदडी ऊघडने लगता है –शरीफा खिंचती है–दोनों में खिंचातानी)

शरीफाः (अतीत में उतर जाती है) कैसे देखें अख्खे लिहाफ का ख्वाब? मैंने, कभ्भी, कुछ भी अख्खा नहीं पाया। बचपन में रोटी भी हंमेशा आधी ही मिलती थी। बिस्तर भी आधा। छोटी थी तब बहनों के साथ बांटना पडता था और शादी के बाद.....! अब खुद के हाथ–पांव तोडके, आंखे फोड के जो कमाती हूँ वह रोजी भी कहां अख्खी मिलती है? अरे, जो कुछ भी हाथ में आता है उसमें से आधा का तो ये नासपिटा नूरा पी जाता है।

(नूरभाई एक ओर खडा खडा यह सब सुन रहा है। संजीदगी और प्यार से आकर शरीफा की बगल में बैठ जाता है)

नूरः (निश्वास लेकर) अरे बावली, पी जाता हूँ इसलिये कि गहरी नींद सो सकूं। ऐसा सोऊं..... ऐसा सोऊं.... कि सपना तक आ न पायें।

गुदडीः (भडककर) हां.... क्योंकि आयेगा तो आधा सपना ही आयेगा! अरे नादानों, सपना देखना छोड दोगे तो जिन्दा कैसे रह पाओगे?! (पति–पत्नि झेंप कर चूप हो जाते हैं।) (सलीम और तितली आते हैं, तितली सबको बैठा देख कर लजाकर अपने घरकी ओर दौडी जाती है तो बिचमें ही शरीफा अपनी और खींचके प्यार से पास में बिठा देती है)

सलीमः (तैश में) अरे बाबा, अब सपने देखने का वक्त ही कहां बचा है? अब तो एक्शन की ही बात करो!

गुदडीः अरे... क्या बात है सलीम! इतने तैश में क्यों हो?

सलीमः बाबा, हम उधर शमशान वाली बस्ति में गये थे। कई लोग मिले। पता चला कि मोहनने वहां पर मीटिंग करके लोगों को जगह खाली करने पर समझाना शुरू कर दिया है।

तितलीः अरे, घौंस जमा रहा है, घौंस!

गुदडीः लोग क्या कहते हैं?

सलीमः वे क्या कहते? वहां पर भी अपने जैसा ही हाल है! कुछ लोग खाली करने को तैयार है पर कुछ है कि लड़ाई के मूड में भी है। मुझे तो लगता है कि एक–सी सोचवाले लोगोंको इकट्ठा किया जायें और लडत के अलग अलग तरीके सोचें जायें।

(उसकी बात सब उत्सुकता से सुन रहे हैं। गुदडी कुछ सोच में है)

शरीफाः (बोल पडती है) लडत के तरीके? जैसे?....

सलीमः जैसे..... कोरट में जाके पूरी योजना पर स्टे लिया जायें....

तितलीः या फिर एक टीम बनाके, ठराव तैयार करके, उस टीम को ठेठ ऊपरवालों के पास भेजा जायें.... ताकि योजना के बारे में फिर से सोचने पर वे लोग मजबूर हो जायें।

सलीमः या फिर सरकार के सामने धरने दिये जायें।

तितलीः या तो उपवास.....

गुदडीः (हंस के सिर हिलाता है) तुम दोनों ने उस बस्ति में यह सारी बातें की? (दोनों हामी भरते हैं –कि बाहर काली की गालियां सुनपई देती हैं। पलभर में काली एक हाथ में जूने कपडों का टोकरा और दूसरे हाथ में भीखू की बांह पकड के धसमसाती हुई आती है, भीखु को सबके सामने ला पटकती है)

कालीः लो करो इसका फेंसला!

सारेः क्यों? क्या हुआ? क्या किया इसने?

कालीः बस्ती के सत्यानास की तैयारी!

गुदडीः हुआ क्या काली, शांति से बता.....

कालीः अरे, शांति काहे की? यहां तों जमदूतों की सवारी आनेवाली है... जमदूतों की। ये मुवा उन शख्सों को यहां नोंतरा दे के आया है।

सलीमः मतलब?

कालीः मैं उधरवाली पोल में गई थी कि ये करमजला उस सेतान गेणुदादा और उस मांके मोनिये के साथ खुसुर–पुसुर कर रहा था।

गुदडीः (चिंतित) तो क्या मोहन भी उन लोगों से जा मिला? फिर?

भीखुः मैं बताता हूँ..... बताने कु इधरीच आ रहा था, रास्ते में ये काळका मिल जो गई.....

सलीमः भीखुकाका! मुद्दे की बात करो।

भीखुः मुद्दा ये कि मैंने, मोहनियेने और गेणुदादाने अगले हप्तें, अपने मोहल्लेमें आचार्यजी की मीटिंग नक्की की है। वे यहां पधारमणी करेंगें और सबको अपनी बात बतायेंगें।

सारेः अपनी बात? मानें कौन सी बात?

भीखः ये ही..... बस्ती खाली करवाने की, मुआवज़ा लेने की, नयी जगह की....

नूरः तो उस बात के लिये आचार्यजी की क्या जरूरत?

सलीमः अब्बु..... अब तो इस देश के सारे फैंसले वे ही करेंगें ना?

तितलीः हम ऐसा नहीं होने देंगें।

भीखुः फिर यहां बुलडोजर चलेंगें।

कालीः तो हम उसके आगे सो जावेंगें पर ये बस्ती नहीं छोडेंगें।

(सन्नाटा, गुदडी सलीम के कंधे पर हाथ रखके उसे एक ओर ले आता है)

गुदडीः सलीम..... क्या सोच रहे हो?

सलीमः अब ठराव, धरणा..... से काम नहीं चलनेवाला! (मुडकर) साथियों, हम गरीबों को लडने के सिवा..... सामने करने के सिवा कोई चारा नहीं रहा। लगता है, वक्त आ गया है।

(सारे स्तंभित हो के सोच रहे हैं)

कालीः (बिफरकर) हम से जो टकरायेगा.... मिट्टी में मिल जायेगा।

(गुदडी तैश में आकर शुरू करता है –सलीम, तितली, काली जुड जाते हैं, नूर और शरीफा सारी बात समजने की कोशिश कर रहे हैं।)

गीत –5

(गीत धीमी लय में शुरू, फिर तेज)

गुदडीः यह फैसले का वक्त है..... वक्त है.... वक्त है.....

सलीमः यह इम्तिहान सख्त है..... सख्त है..... सख्त है.....
ये फैंसले का वक्त है, तू आ कदम मिला।
ये इम्तिहान सख्त है, तू आ कदम मिला।

सारेः अब जोर–जुल्म के ठेकेदारों को ललकारेंगें।
अपना हक छिनने वालों को हम सबक सिखायेंगें
अब उड चूकी है नींद हमारी, सपने चूर हुए.....
यह जागने का वक्त है, तू आ कदम मिला.....

फेड आउट

दृश्य –11

(ऐप्रन के दोनों छोर पर स्पोट होंगें। एक स्पोट में सुंदरी खडी खडी मीराबाई के भेस मे मगन–मस्त नृत्य कर रही है और गा रही है.... "दूसरा न कोई.....!" तभी उसके कंधे पर लटकती झोलीमें मोबाईल बज उठता है)

सुंदरीः हल्लो..... सोरी..... जय श्री कृष्ण.... जय अंबे.... जय जलाराम..... जय जिनेन्द्र.... जय स्वामिनारायण..... जय.....

(दूसरे स्पोट पर प्रकाश होते ही जे.जे. दिखाई देता है जो अपने मोबाईल में गा रहा है, झूम रहा है) –"कम्मोन इन्डिया – करलो दुनिया मुट्ठीमें"

जे.जे.ः अरे सुंदरी! कहां हो तुम?.... अरे हां भई हां..... जय स्वामीनारायण.... पर सुनो.... तुम जहां भी हो, वहां से यहां जल्दी पहूंच जाओ। हमें कोन्ट्रेक्ट डिस्कस करने हैं। CM की ऐपोईन्टमेंन्ट तो हो गई है।

सुंदरीः (अपनी ही मस्ती में) कोन्ट्रेक्ट? कैसा कोन्ट्रेक्ट? मुझे कुछ नहीं करना है..... मैं तो बस यूंह ी गाती रहूंगी–नाचती रहूंगी..... दूसरा न कोई..... दूसरा न कोई.....

जे.जे.ः वैसे तो यहां पर भी कुछ ऐसी ही स्थिती है –दूसरा न कोई..... मतलब के हम दोनों के सिवा.... तीसरा न कोई! पर सो वॉट..... तुम चली आओ.... काम निपटाना है।

सुंदरीः नहीं..... मैं तो यहां बहुत मजे में हूँ..... आहाहाहा..... ओहोहोहो.... बस यात्रा ही यात्रा..... यात्रा ही यात्राा..... कभी गौरवयात्रा..... कभी संस्कृतियात्रा, कभी इतिहासयात्रा, कभी भूगोलयात्रा, कभी स्मशानयात्रा, कभी अस्थियात्रा, कभी मस्तीयात्राा, कभी.....

जे.जे.ः अरे नहीं सुंदरी..... कोन्ट्रेक्ट..... कोन्ट्रेक्ट.....

सुंदरीः ओ..... नो..... जे.जे. मुझे मत रोको! अभी तो कितनी सारी यात्रायें बाकी है?! अभी होंगी माताजी की यात्राा..... फिर बापु की यात्रा..... फिर ठाकुरजी की..... फिर स्वामीजी की..... फिर साधुजी की..... फिर बाबाजी की..... फिर.....

जे.जे.ः (उछलकर) शट्प! एक बार कह दिया ना? तुम आ रही हो। सुनो! हलो!.... सुनो..... मैं यहां मनीनगर मे हूँ।

सुंदरीः क्या? मनीनगर में? तो फिर मैं भी वहींच हूँ..... यहां पर तो चारों ओर बस मनी ही मनी है.... समंदर भी मनी, किनारा भी मनी, रेत भी मनी, जंगल भी मनी, कंकर–पथ्थर रजकण.... हर झोंका..... हर लहर.... बस मनी ही मनी!

जे.जे.: अबे ओ! मैं तो यहां, यहां CM वाले मनीनगर में हूँ.... कोन्ट्राक्ट के लिए....

सुंदरीः ओह शीट्! डोन्ट टोक लोकल.... टोक ग्लोबल.... थींक ग्लोबल..... लीव ग्लोबल.....
(वह उन्माद मे नाचती रहती है)

जे.जे.: (मोबाईल ओफ करके, ऊछालके मुट्ठीमें भर लेता है)
कम्मोन इन्डिया – करलो दुनिया मुट्ठीमें!

फेड आउट

दृश्य –12

(बस्ती का रंग बदला हुआ है। फूलमालाऐं, केसरिया तोरण, वगैरहा लटक रहे है। कुर्सियां पर गेणुदादा और मोहन बैठे हैं। भीखु यजमान की मुद्रा में इधर–उधर घुम रहा है। बस्ती के लोग कुर्सिया के सामने बैठे हैं। गुदडी, सलीम, तितली ऐप्रन के एक छोर पर सारा तमाशा देखते हुए खडे हैं। काली अस्वस्थ सी बैठती है तो कभी ऊठती है। सभा को अब आचार्यजी संबोधन कर रहे हैं)

आचार्यः बंधुओ और माताओं..... आज यहां आपके आवास में संबोधन करते हुए हम बहुत ही प्रसन्न है, क्यों कि यह हम देख रहे हैं कि इस नगर का जनसाधारण अब राष्ट्रनिर्माण के अभियान को चल पडा है। (मोहन तालियां बजवाता है) इस अभिनंदन के पश्चात् मैं आप को विदित करना चाहता हूँ कि आप लोग किस तरह इस महायज्ञ को अर्पित होने जा रहे हैं। यह कथा है सृजन की। सृजन और विसर्जन एक ही सिक्के के दो पार्श्व हैं। इस राष्ट्रनिर्माण के अभियान में इस नगर के ही नहीं किन्तु हर प्रांत के, हर प्रखंड के, हर राष्ट्र के और विशेषतः धनाढ्य–समृद्ध राष्ट्र के प्रत्येक जनसाधारण संमिलित होना चाहते है। अत एव हम सारे एकत्रित होकर, हर्षोल्लासपूर्वक इस महायज्ञ का शुभारंभ कर रहे हैं। (मोहन तालियां बजवाता है)

गुदडीः मतलब कि अब हमें कुरबानी का बकरा बनायेंगें! (गुदडी उघेडता है)

सलीमः विदेशी धन्नासेठों का गुलाम बनायेंगें।

मोहनः (उनको चूप कराते हुए) श्..... शांति, शांति!

दादाः ऐ..... कौन आवाज करता है रे? ..... चूप!

आचार्यः हां..... तो हम कह रहे थे कि यज्ञ का प्रारंभ इस पुराण प्राचीन महान सांस्कृतिक स्थल से ही हम करेंगें.... इस भव्यतम नदीतट से करेंगें। बंधुओं..... आज समय आ गया है, अपनी इस अमूल्य धरोहर का सही मूल्य पहेचानने का।

सलीमः हां..... करोडों में बेच दी जायेगी तब अमूल्य ही कहलायेगी ना?

आचार्यः तो..... नदी..... आहाहा.... सरिता..... सर्वदा..... फलदायिनी! और उसके मधुर मिष्ट फल चखने अब हम जा रहे हैं। स्मरण रहें..... नदियां संस्कृति की जननी होती है। नदी के किनारे मानव सभ्यता ने अपना इतिहास रचा है। आज हम भी इस नव महासहस्त्राब्द के कगार पर, इन पुराण–प्रथित जलतरंगों पर अपने भी हस्ताक्षर करने जा रहे हैं। (तालियां)

कालीः दै जॉणं। कब से ये चटर–पटर कर रहा है और अपण लोग है कि तालियां पिट रहे हैं। पता भी चलता है, वह क्या बक रहा है?

तितलीः अरे वही..... अपने को धकलने की ही बातें हैं..... कौवा कहीं का.... नोंच नोंच के बोटियां खानेवाला।

आचार्यः (उनकी ओर ध्यान देकर) माताओं, बहनों..... आप ही तो सभ्यता और संस्कृति की रक्षिकाऐं हैं। आप तो समर्पण का अर्थ जानती है। आप तो स्वयं ही समर्पित हैं। तो आईये, इस नव–निर्माण में हमें सहकार दीजिये। बसए संमति दीजिये..... बाकी का हम संभाल लेंगें..... (काली, तितली झूंझलाकर चूप हो जाती हैं)

गुदडीः ये लो..... शिकार खुद चलके दाने डाल रहा है। (गुदडी ऊधेडता है) (आचार्य वहीं से गुदडी को प्रणाम करते हुए, सबके बिचसे ऐप्रन पर आ जाते है)

आचार्यः महाराज! आशिर्वाद दीजिये। हमारी आशा है, बल्कि नम्र निवेदन है कि आप ही इस अभियान का प्रारंभ करे। याद है ना इस महामहिमावान् नगर की स्थापना आप जैसे ही एक गुरू बाबा माणेकनाथ ने की थी। हम भी आपको ही वह सम्मान देना चाहते हैं..... आईये, अपनी गुदडी अखंड रखिये, इस प्रायोजना को भी अखंड रखिये।

(गुदडी, सलीम हक्का–बक्का, कुछ कहें इस से पहले)

आचार्यः महाराज, हमारी योजना है कि, नये आवासों में हम भारत माता का मंदिर स्थापित करना चाहते हैं। और उस मंदिर का शिलान्यास आप के ही हाथों हों यह हमारी मनोकामना है।

(सुननेवालों में हलचल –मंदिर–माता–मंदिर–की आवाजें उठ रही है। लोग आचार्य के शब्दों की चाशनी में भीगने लगे हैं। उधर गुदडी, सलीम, तितली, काली, एक जूट बनकर ऐप्रन पर खडे हैं।)

(आचार्य लोगों के मूड को बदलता देख के प्रसन्न है, ऐप्रन के दूसरे छोर पर जाकर, इन लोगों को मुस्कुराते हुए देख रहे हैं।)

आचार्यः हां..... तो बंधु मोहन! अपने जनःसाधारण से हमारी आरंभ यात्रा का विवरण कर दो ना!

मोहनः (अपना महत्व हो रहा देखकर फूला नहीं समाता है) हां..... तो मेरे भाईयों और बहनों! आचार्यजी का कहना यह है कि यह जगह खाली करने से पहले हम अपनी कुळदेवी के पवित्र धाम की जात्रा एक साथ करने निकलें। माताजीकी आशिष ले लें। ताकि नयी जगह शुभ शगुनवाली हों।

(फिर से लोगों में कुळदेवी..... माताजी..... जात्रा..... आशीर्वाद जैसे शब्द उछलने लगते हैं, एक रोमांचक गति)

मोहनः वे चाहते हैं कि हम जात–पांत–धरम–संपदाय का भेदभाव भूलकर, बस्ती के सारे लोग यहां से निकल के माताजी पहूंचे –वहां से पवित्र नारियल–चुंदडी–धजा की प्रसादी यहां ले आयें और नयी बस्ती में जाके धजा रोपण करें।

(फिर से उल्लास, उमंग, लोग जैसे जादूमें आ गये हैं। आचार्य वातावरण को भांपकर आगे आते हैं।)

आचार्यः वाह! साधु..... साधु..... हम बहुत प्रसन्न हैं। आपने हमारी बिनती स्वीकार कर ली। अब हम बिदा लें? आप सबको शुभकामनाऐं (अपने लोगों की ओर भीनी नजर डाल के) यह अपने आपमें अनूठा अवसर है, अगर चूक गये तो..... (मीठी हंसी हंस के) विदा?..... तो मोहनभैया, भीखुभाई, आपको सब सौंप रहा हूं..... बाकी बातें समझा देना..... . और अगली एकादशी को प्रस्थान करना। चलिये..... कहिये..... जय राष्ट्रनिर्माण.... . जय नवनिर्माण..... भारतमाता की जय.

(निकल जाता है। गेणुदादा उसके साथ जाता है। यहां भीखु और मोहन मंच पर जा के)

दोनोंः बोलो कुळदेवी माता की..... जय!

(विचित्र उन्माद – लोग इन दोनों के गिर्द जमा हो जाते हैं।)

(ऐप्रन पर गुदडी–सलीम–काली–तितली खिन्न–गुदडी बैठ जाता है..... हमींग के बीच से रूदन जैसा गीत फूट पडता है।)

गीत –6

गुदडीः हाय..... हम टोला है।
धरम का लेकर नाम ये कैसा अफीम मन में घोला है..... हाय.....
भूल गये जीवन का मतलब
सवाल असली भूल गये
भूल गये हम जुल्म के किस्से
असली दुश्मन भूल गये
क्या मांगे इन्साफ..... रे! भाई! लिया भीखका झोला है.....

धत्तेरी..... हम टोला है..... हाय..... हम.....हाय.. हम... टोला है।

फेड आउट
दृश्य –13

(गीत खत्म होने पर मंच पर दो हिस्से हो गये हैं –एक में यात्रा के लिये तैयार हो रहे लोग हैं, जिन्हें भीखु और मोहन पट्टे दे रहे हैं, पैसे दे रहे हैं अैर लोग है कि नारे बोल रहे हैं। इधर दूसरे हिस्से में गुदडी, सलीम, काली और तितली है जो सारा कांड दुःख और आक्रोश से देख रहे हैं।)

(धीरे धीरे लोग लाईन में बाहर नीकल रहे हैं, बाबा को आगे से झुकते हुए, नीकल जाते हैं।)

सलीमः (आदिवासी दंपति को यात्रा मे जाते हुए देखकर) अरे बिजया, फूली..... तुम लोग भी? यह भला, तुम्हारी जात्रा भी हो गई?!

(वे लोग बिना बोले जयजयकार करते हुए निकल जाते है)

भीखुः (काली से) अरी ओ, चलती है कि नहीं?

कालीः चलेंगी मेरी बला रात! पिट्ये, तूने पैसे बनाने के लिये ये सारा तमासा किया है –मुझे सब पता है। पर कब तक? लोगों को मूरख बनाना इतना आसान नहीं है।

सलीमः लडने पानी फेर है..... काली मौसी, एकदम आसान है। देखा नहीं, हमने कितनी मुश्किल से लोगों को के लिए इकट्ठा किया था..... कि देखते ही देखते इन लोगों ने हमारी मेहनत पर दिया।

भीखुः करें (लपक्कर, लडने के लहजे में) हां, तुझे तो ऐसा ही लगेगा ना! हम अपने धरम का काम –करवायें उसमें तुझे तो तकलीफ ही होगी ना!

सलीमः कोई आमने–सामने) (झल्लाके) देखो भीखुकाका! अपनी बस्ती में आज तक हमारे बीच धरम की आड लेकर नही लडा है! आज ये खोट तुम्हारे मनमें कैसे आ गई रे? (दोनों गुर्राते हुए

गुदडीः उपर छोड दे बेटे, खामुखां बबाल हो जायेगी। वक्त नाजुक है..... फिर आज कल तो इन के सुदर्शन चक्र की छत्रछाया जो है!

भीखुः (चिढाता है) अबे मुझ से पंगा ले रहा है? देख, अपने माँ–बाप को देख!

(सारे देखते हैं कि नूरभाई और शरीफा भी सिरपे पटका बांधे चले आ रहे हैं, सब आश्चर्य मूढ)

सलीमः अम्मी, अब्बू, आप लोग भी?

नूरः बेटे, वैसे भी हम कहां धरम–धरम में फर्क समझते है? और फिर मोहन ने बहुत इसरार किया कि चाचा, आपको तो धजा लेकर आगे चलना है..... हमारी बस्ती के भाईचारे का नमूना दुनिया को दिखाना है।

शरीफाः .. और अब तो हमारे वालों की तो हर साँस इन की मुट्ठीमें हैं, उस पर हम तो बुढे हो चलें... लड़ने की ताकत लायें कहां से?

सलीमः पन.....?

गुदडीः (अजीब गंभीरता से) जाने दे सलीम! तेरे माँ–बाप डर गये हैं, बहुत डर गये हैं। (सिर झुकाकर दोनों निकल जाते हैं)

भीखुः (नज़र में गंदगी भरके) और तितली, तू? तू भी आ रही है ना? हम को तेरी बहुत जरूरत पडेगी!

(सारे सकपकाते है, सलीम–काली भीखु पर घंसते जाते हैं। पर गुदडी–तितली छुडवाते हैं।)

तितलीः है? सलीम, यह कुछ गलत तो नहीं कह रहा है। अभी हमारे सपनों वाला समाज कहां आया इस समाज में तो हमें ये ही करना पडेगा ना? फिलहाल मैं भी जा रही हूँ।

सारेः तू? तू क्यों? तू भी?

तितलीः कर छोड हां, मैं अपना धरम बजाने जा रही हूँ, कालीमौसी, मेरे सिवा अम्मी–अब्बु का खयाल कौन रखेगा? (वह कुछ पल सलीम के आगे खडी रह कर, पलभर उसका हाथ पकड देती है, चल देती है)

भीखुः काली..... आखरी बार पूछता हूँ.....

कालीः जा..... . (उसे अचानक मुवे नीच, हलकट, बिकाऊ..... भडवे! मेरे साथ बात मत कर.. जा, तु अब्बी निकल जा.... मर..... कभी वापस मत आना..... मैं तेरा कारज खाऊ..... मैं तेरा लाडवा खाऊं..... धकेल कर निकालती हैं, यहीं सलीम और गुदडी हताश..... हतप्रभ से खडे है। गुदडी की देह कांप रही है)

सलीमः कितना बडा बाजार..... कितनी बडी सौदेबाजी..... उपर से नीचे तक..... चारों ओर.....

गीत –7

गुदडीः (आवेश से गाने लगता है)
बिक गई, बिक गई, बिक गई, बिक गई
हमारी दुनिया बिक गई रे! (2)

ये किसके हथ्थे चड गई दुनिया
जिनकी दानत खोटी है
दोमुँहे हैं इनके रवैये
मुंह में हमरी बोटी है
भूख भी बिक गई, प्यास भी बिक गई
हमरी सांसे बिक गई रे! (2)

बिक गई धरती
बिक गया पानी
अब तो इन्सां बिकते है
बिक गया इंसां, धरम भी बिक गया, आपनी ताकत बिक गई रे!

फेड आउट

दृश्य –14

(ऐप्रन पर स्पॉट जे.जे. बोक्सिंग पोषाक पहने, हाथ में ग्लोव्ज़ पहने घूंसाबाजी कर रहा है। बोलता जाता है।)

जे.जे.: ये ले.... आतंकवाद की..... ये ले विदेशी हाथ की..... ये ..... ये..... येले पाकिस्तान की..... ये ले पाडौसी देश की.....ये ..... ये..... सद्दाम..... ये ले..... बिन लादेन..... ये ..... ये..... (तभी उसकी चड्डी की जेब मे मोबाईल बज उठता है)

हां..... सुंदरी! बोल, कहां है तू..... आयम वेईटिंग.....

(दूसरे स्पोट पर सुंदरी सफेद खादी की साडी, झोला लिये)

सुंदरीः (अपने मोबाईल पर) ओ नो..... मैं तो..... अरे पर जे.जे. क्या हुआ तुजे? इतना क्यों हांप रहा है? जोगिंग कर रहा है या जिममें है?

जे.जे.: अरे नहीं, मैं तो लडाई की तैयारी कर रहा हूँ।

सुंदरी: लडाई? ओ..... नो.....

जे.जे.: हां..... आतंकवाद के खिलाफ़, विदेश ताकतों के खिलाफ, विकास में बाधारूप होनेवालों के खिलाफ, राष्ट्रद्रोहियों के खिलाफ लडाई..... देखा नहीं, पूरे वायब्रन्ट की वाट लगा दी सालों ने? (धूंसाबाजी)

सुंदरी: अरे नहीं..... ये कैसे शब्द बोल रहा है तू? लड़ाई कभी नहीं होनी चाहिए..... मैं तो लडाई के एकदम खिलाफ हूँ। जानता है, मैं कहां हूँ? पोरबंदर में। यहां बापू के घर में, मैं ने जैसे ही कदम रखे, ओह..... क्या वायब्रेशन्स थे?..... पीस..... शांति..... परम शांति. ..... जे.जे.! मेरा तो बिलकुल हृदयपरिवर्तन हो गया है..... खादी पहनती हूँ..... शुद्ध शाकाहारी बन गई हूँ..... नाउ नो मोर मेकडोनाल्डझ..... जे.जे. इसबार का इंन्डिया टूर –गुजरात टूर इतना रिवोर्डिंग होगा..... यह मैं कहां जानती थी..... जैसे..... जैसे..... मैंने दीक्षा ही लेली है.... शांति की..... ओम.... शांति.....

जे.जे.: स्टुपिड! मैं यहां लडाई की तैयारी कर रहा हूँ और तू वहां कबूतर की तरह गुटूर गूं मचा रही है?

सुंदरी: ओह..... शांति तो मेरा जीवनमंत्र हो चला है। जानता है, इसबार वर्ल्ड सोश्यल फ़ोरम में मैं तो विश्वशांति पर बात करनेवाली हूँ।

जे.जे.: ओ. नो. वह तो ठेठ जनवरी में है..... हमारा विझा तो खत्म हो जायेगा..... तुम्हें कहीं नहीं रूकना है..... वापस आ जाओ..... सुंदरी!

सुंदरी: नहीं..... आई विल स्टे बैक..... मैं तो शांतिदूत हूँ.... ओम शांति!

जे.जे.: शट् अप! पगली, तू कहीं की नहीं रह जायेगी। नयी दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध का इन्तेजार है। दुनिया के सारे विकसित राष्ट्र उस आतंकवादी कौम को खत्म करने की तैयारी कर रहे हैं। प्रेसि. बुश हमारे लीडर होंगें। अपने पीएमजी भी हमारे साथ में रहेंगें। मेरा मतलब है कि युद्ध के विषय में कविताऐं लिखकर युद्धभूमि को धमधमा देंगें। आ जाओ सुंदरी..... केसरिया करने चली आओ.....

सुंदरी: नहीं जे.जे. अब भी समझ ले..... ओम शांति..... ओम शांति..... (शांति जाप जपती सुंदरी और बोकसिंग कर रहे जे.जे. पर प्रकाश, फिर अंधकार)

फेड आउट

दृश्य –15

(शाम का धूंधलका। बस्ती लगभग खाली है। गुदडी और सलीम बैठे हैं। चिंतित है। काली जूने कपडो का टेकरा लिये कपडे छांट रही है)

सलीमः आज तीन दिन हो गये। अपन लोगों की जात्रा अभी खतम नहीं हुई?!

कालीः अरे देखना.... उन मुंवों ने जो जोब–खरची दी है वो खलास होते ही आफुडे वापस आ जायेंगें। पेट कैसे भरेंगें? कौन भरेगा? कितने दिन तक भरेगा? ये धरमकरम तो भरे पेटवालों के चोंचले है!

सलीमः पता नहीं मौसी! मुझे तो लगता है कि लोग अपने भूख–दुख को भूलने के वास्ते ही धरमकरम में डूबे रहेते हैं। जैसे भीखुकाका अपनी बेकारी भूलने के वास्ते पीता रहा है! (कुछ चहल कदमी के बाद, मुडके) हां..... ओर फिर हम जैसे लोगों ने भी उनको क्या दे दिया है? क्या दे पाये हैं? और लोगों को तो चाहिए..... बस चाहिए..... और भी..... और भी..... चाहिए..... ऊपर से लेकर ठेठ नीचे तक.....? (सोच में डूब गया है) पता नहि..... अपनी लडत का क्या होगा?

गुदडीः (वह कुछ गीत की पंक्तियां बना रहा है) यहां लोग..... सहमे हुए..... ना.... उंहूं... यहां लोग सर को उठा कर.....

सलीमः (बिफरकर) बाबा, मेहरबानी कर के सर उठानेवाली बात मत गाओ। यहां तो सर झूकते ही जा रहे हैं।

कालीः तो हम..... उनकी गरदन पकड के लैन में खडा कर देंगें। आने तो दे साले मूरखों को। अक्करमी कहीं के। (बडबडाती हुई अंदर–बाहर कर रही है, कपडों का ढेर लगा रही है)

(ऐप्रन के दोनों छोर पर स्पोट। एक में आचार्यजी मोबाईल लेकर खडे हैं, दूसरे और मोहन और गेणुदादा है)

आचार्यः जय श्री राम मोहन! तो क्या..... मैदान साफ हो गया है ना?

मोहनः जी आचार्यजी! जय श्री राम।

आचार्यः वाह, अब तो सांप भी मरेगा और बांस भी टूटेगा।

दादाः (उतावली से) कहां? ये दो–तीन खतरनाक लोग अब भी बच गयेले हैं।

आचार्यः अब नहीं बचेंगें। (हास्य) इनकी व्यवस्था भी हो जायेगी।

मोहनः जी? मतलब?

आचार्यः अपने आप पता चल जायेगा। अब तुम लोग श्री गणेश कर ही दो। देखो श्रीफल –बिलिपत्र सब तैयार है ना?

दादाः हा ओ.... (त्रिशूल और हाथबम् दिखाता है) और भस्मविभूति भी तैयार ही च है।

आचार्यः वाह! यह ठीक किया। भस्म विभूति ने पिछली बार बहुत बडा चमत्कार कर दिखाया था..... पता ही न चलें और राम नाम सत्त हो जायें! चलो, फिर विलंब किस बात का? जय श्री राम! (दोनों ओर जयश्री राम का अभिवादन। अंधेरा)

(काली लालटेन लेकर घर में से आती है कि कुछ शोशे –झलझले–धमाके–उसके पैरों के पास पडे कपडे आग को पकड लेते हैं।)

कालीः ओ मा.... ये क्या? .... वो ही..... राख्खसों का काम..... आरे ये सब जला दिया..... ओ मा.... मुवे हत्यारे..... आह.....

(उधर गुदडी –सलीम भी भौंचक्के कुछ समझ पायें उससे पहले ही बस्ती में आग की लपटें उठने लगती है)

सलीमः साजिश..... बाबा..... साजिश..... बचना..... मौसी.....

(दोनों दौड के काली को खिंचते हैं पर काली झुलस गई है। सलीम बोखला कर इधर उधर भागता है कि पुलिस की व्हीसल और जीप की सायरनों से माहौल भर जाता है.... . यहां गुदडी काली को बचाने की कोशीश में है और सलीम बाल्दी छिडककर आग बुझाने की व्यर्थ कोशिष में है –तभी धडधडाती हुई पुलिस आ जाती है)

पुलिस–1ः (सलीम को दबोचकर) ऐ, कहां भागता है? चल, अंदर चल।

पुलिस–2ः तुम्हीं ने बस्ती को जलाया है। खाली मैदान देख कर.... अकेली औरत को देखकर.... लुच्चे.... फायदा उठाता है?

पुलिस–1ः अंदर कर दो उसे। छंटा हुआ बदमाश है।

पुलिस–2ः हां हां..... थाने में मोस्ट वोन्टेड है हरामझादा..... आतंकवादी! (सलीम साजिश – साजिश चिल्लाता है –छटपटाता है पर पुलिस उसका दबोच कर घसीटते हैं। इधर गुदडी कभी काली को, कभी सलीम को बचाने की भाग दौड में है। पुलिस सलीम को ले जाते हैं। व्हीसल – सायरन की चीखपुकार दूर जा रही है, झुलसी हुई बस्ती में गुदडी काली की देह को उठाता है पर निष्प्राण शरीर धम से गिर जाता है। गुदडी उसके आगे बैठ जाता है –एक सिसकी वातावरण को चीर देती है –गुदडी का विलाप गीत बनके टूटे हुए शब्दों में बह निकलता है।)

–:गीतः–

जल गई..... जल गइ..... जल गई..... जल गई....

अपनी दुनिया जल गई रे!

फेड आउट

दृश्य –16

(भोर के फैलते हुए ऊजाले में, जलती हुई बस्ती के बीच मूढ सा गुदडी वैसे का वैसा बेठा है। सामने काली की लाश है वह उसे अपनी चादर से ढांपता है। तभी बाहर से जयजयकार सुनाई देती है। अपने लोग यात्रा से वापस आ रहे हैं। उन्माद, भजन, कीर्तन, धून। गुलाल, चुनरी लहरा रहे हैं। हाथलारी में मूर्ति है, धजायें फहरा रही हैं। बस्ती के अंदर आते ही सारा जुलूस फ्रिज)

शरीफाः (चीखकर) गुदडीबाबा..... ये क्या हो गया?

(लोग भोंचक्के। हू –हू करती धुंए की लपटों के बीच दौड जाते है। अपने अपने घर को देखके रो–चीख पडे है। –सन्नाटा –हूहूकार – भागदौड)

नूरः कालीबेन? ..... (लाश जैसा कुछ देख के सहमा हुआ है)

गुदडीः (प्रेत सी आवाज मे) कालीबेन शहीद हो गई। (सब हाय हाय कर उठते हैं। लाश के आगे जमा होने लगते हैं।)

गुदडीः साजिश में..... शहीद हो गई.... साजिश पहले तुम लोगों को यहां से हटाने की..... फिर बस्ती जलाने की..... साजिश....

बिजयाः चालाक लूटेरे..... राख्खस..... हत्यारे.....

फूलीः देखा रे.... कैसे उठा दिया..... मेरी कालीबेन को....

शरीफाः (अचानक जैसे कुछ याद आ गया) और मेरा बेटा? कहां है? सलीम?..... सलीम.....(बावरी हो के इधर–उधर दौडती है)

गुदडीः (जैसे अब होश में आया) सलीम?..... वह तो..... यहीं कहीं था..... हां....

नूरः आकर बाबा.... बताओ..... कहां है हमारा बेटा?..... कहीं वह भी तो?..... (तभी तितली विंग में से सबके बीचमें धडाम से गिरती है)

तितलीः सलीम को पोटा में धर लिया रे..... ! (सारे मूढ) उधर..... के.... पुलवाली बस्ती से पता चला.... कल रात ही..... इधर काली मौसी..... और फिर पुलिस आई..... सलीम को ले गये... .. अंदर कर दिया पोटा में.....

गुदडीः हमने हमारी लडाई के दो सिपाही गँवा दिये!

बिजयाः हमारी लडाई?.....

गुदडीः हां हमारी लडाई, हमारी जिन्दगीयों को बचाने की लडाई।

नूरः बहुत कुछ..... बहुत कुछ बचा लेने की लडाई छेडी थी ना..... हमने?

शरीफाः हां..... पर अब.... अब मेरे बेटे के बिना कौन लडेगा? मेरी कालीबेन के बिना आगे कौन चलेगा?

(बोझल समय। तितली उठके आगे आती है। इधर उधर देखती है। जलते हुए मलबे से लकडी निकाल के मशाल की तरह उठाती है। काली की लाश के सामने खडी हो के गंभीर स्वर में कहती है)

तितलीः मैं सबसे आगे चलूंगी.... हम जारी रखेंगें..... सब लडेंगें यह लडाई।

(सब की जान मे जैसे जान आती है। सब तितली को देखके उत्साहित होने लगते है। गुदडी के चहरे पर स्पोट.... उसका चेहरा जगमगा रहा है वह कानों पे हाथ रख के गाना शुरू करता है।)

(लोग धीरे धीरे जुडते जाते हैं।)

–:गीतः–

गुदडीः सुनो, नदी क्या कहती है..... सुन लो!
जीना है तो मरना होगा
कदम कदम पर लडना होगा
जीना अपना हक है, साथी!
अपने हक को पाना हो..... सुन लो!..... सुनो नदी।

भले ही तकलीफों ने घेरा
मक्कारों ने डाला डेरां
आज अंधेरा जीत ही लेंगें
लायेंगें हम नया सवेरा..... सुन लो! सुनो नदी।

दरार को हम दूर करेंगें
अब न डरेंगें..... अब न झूकेंगें
खून खौल के खोल उठेगा
हम बदलेंगें.... सब बदलेंगें..... सुन लो!....

–समाप्त–